Chap-4

चतुर्थ अध्याय

शिवानी के उपन्यासों में नारी चित्रण

1. पात्र-परिभाषा एवं महत्व
2. पात्रों का वर्गीकरण
3. नारी चित्रण
4. विशेष रूपों में नारी चित्रण

शिवानी के उपन्यासों में नारी चित्रण

कथानक के पश्चात् उपन्यास का द्वितीय एवं महत्वपूर्ण अंग चरित्र या पात्र हैं। उपन्यास की घटनाएँ जिनसे सम्बन्धित होती हैं या जिनको लेकर उनका घटित होना दिखाया जाता हैं, वे पात्र कहलाते हैं। ये ही पात्र जब क्रियाकलाप करते हैं तब कथावस्तु का निर्माण होता हैं।

1. पात्र-परिभाषा एवं महत्व -

''कथा साहित्य के प्रमुख तत्वों में कथानक के बाद चरित्र चित्रण को विशेष महत्व प्रदान किया जाता हैं। उपन्यास की सभी घटनाएँ जिनसे सम्बन्धित होती हैं या जिनको लेकर उनका घटित होना दिखाया जाता हैं, वे पात्र कहलाते हैं।''[1]

पात्र ही एक ऐसा माध्यम होता हैं, जिसके द्वारा लेखक जीवन के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करता हैं। मुंशी प्रेमचंद के अनुसार, ''मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मानता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व हैं।''[2]

1. हिन्दी साहित्य कोश- पृ- 488
2- साहित्य का उद्धेश्य मुंशी प्रेमचन्द- पृ- 54

इसलिए ''उपन्यास सम्पुर्ण मानव जाति या समाज का चित्र कहा जाता हैं।''[1]

एस उपन्यासकार जीवन के वास्तविक चित्रण के लिए ऐसे पात्रों का निर्माण करता हैं जो हममें से ही या हमारी आस-पास की दुनिया से लिए गये हैं। यादि कोई उपन्यास असफल हुआ हैं, तब यह निश्चित हैं कि उपन्यासकार ने सशक्त और प्रभावशाली पात्रों का निर्माण नहीं किया। एम.एल रॉबिन्सन ने पात्रों के विषय में लिखा हैं, ''चरित्र चित्रण से यह आशय हैं कि वे निर्जीव पुस्तक के पृष्ठों से परे मूर्त होकर जीवन्त वैयक्तिता ग्रहण कर ले।''[2] सॉमरसेट मॉम के अपने विचार से,'उपन्यासकार द्वारा निर्मित पात्रों की क्रियाएँ उनकी चारित्रिक विशेषताओं से उत्पन्न होनी चाहिए। पाठक कभी यह न कह सके कि 'अमुक पात्र ने ऐसा कभी न कहा होगा' अपितु उपन्यासकार का ध्येय उससे यह कहलवाना होना चाहिए कि 'बिल्कुल ठीक यही वह हैं जिसकी अपेक्षा मैं इस पात्र से करता था' मैं समझता हूँ यही सर्वोत्तम हैं, यदि पात्र अपने आप में दिलचस्प है। ''[3] पात्र के चित्रण की भी अपनी विशेषताएँ होती हैं।

मुंशी प्रेमचंद के शब्दों में 'उपन्यास चरित्रों के विकास का ही विषय हैं, उसमें विकास-दोष हैं तो उपन्यास कमजोर हो जायेगा।''[4]

पात्र स्वाभाविक लगने चाहिए इसी गुण के कारण टॉसस्टाय ने 'डिकन्स' के पात्रों के सम्बन्ध में लिखा हैं कि 'वे मेंरे निजी मित्र हैं।'

एक श्रेष्ठ उपन्यास के लिए सजीव पात्रों की रचना बहुत जरूरी होती हैं। मानव चरित्र का निर्णय उसके व्यक्तित्व से होता हैं और यह व्यक्तित्व देश, काल

1- हिन्दी उपन्यास में कथा शिल्प- डॉ. प्रताप नारायण टण्डन

2- राइटिंग फार यंग पीपल, एम.एल. रॉबिन्सन- पृ- 11

3- द नावेल एण्ड देअर आथर्र- सॉमरसेट मॉम

4- कुछ विचार प्रेमचन्द- पृ- 18

और परिस्थितियों से जुड़ा होने के कारण इतना बहुआयामी और अपठनीय होता हैं कि उसे केवल विवरणों के द्वारा ही प्रस्तुत नहीं किया जा सकता।

इसलिए चरित्र या पात्र पर विशेष बल दिया जाता हैं और इसलिए ''उपन्यास के अस्तित्व का एक मात्र कारण यह हैं कि वह जीवन के चित्रण का प्रयास करता हैं।''[1]

''चरित्र वस्तुतः मनुष्य का वह आत्म तत्व होता है जो अनिवार्य रूप से सामाजिक माध्यम से विकासशील अथवा क्रियाशील रहता है।''[2] चरित्र-चित्रण की प्रक्रिया अत्यन्त महत्वपूर्ण होती हैं। ''यह किसी ग्रन्थ के पात्रों की वैयक्तिक तथा विशिष्ट विशेषताओं के पारस्परिक वैभिन्न का स्पष्टीकरण करने वाली प्रणाली है।''[3] इस प्रकार पात्र का उपन्यास में अत्यन्त प्रमुख स्थान होता है।

2. <u>पात्रों का वर्गीकरण</u> –

यदि हम पात्रों का विभाजन करें तो पात्रों को विभाजन की श्रेणी में रखने के कई आधार हो सकते हैं, जैसे-लिंग के आधार पर, कथानक में पात्र के महत्व के आधार पर, चारित्रिक विशेषताओं की दृष्टि से, श्रेणी के आधार पर और प्रवृत्ति के आधार पर, कार्य या पद के आधार पर।

इन्हीं आधारों से गुजरते हुए हम शिवानी जी के उपन्यासों के पात्रों का वर्गीकरण करेंगे।

(अ) लिंग के आधार पर-लिंग के आधार पर पात्रों के भेद माने गये हैं-

(ब) पुरूष पात्र,

(ख) स्त्री पात्र

1- द आर्ट ऑफ फिक्शन- हेनरी जेम्स- पृ- 393

2- ह्युमन नेचर इन द मेकिंग, संस्करण, 1947- मेक्स शान- पृ- 159

3- राइटिंग टू शैल्फ में इज टफिंग द हालो मैन करेक्टराइजेशन 1950- स्कार मेरीडिथ - पृ- 62

(क) <u>पुरूष पात्र</u> -

प्रत्येक मनुष्य की प्रकृति अलग-अलग होती हैं। शिवानी जी के उपन्यासों में भी भिन्न-भिन्न प्रकृति के पात्र बिखरे पड़े हैं, जिनमें कुछ असत् पात्र हैं- जैसे, 'सुरंगमा' का गजानन, 'अतिथि का कार्तिक, 'कैंजा' का सुरेश ये सभी पात्र अनैतिक जीवन जीते हैं। इन पात्रों के कोई सिद्धान्त नहीं हैं, सिद्धान्तहीन जीवन को जीते हुए ये पात्र स्वयं के अस्तित्व से ही अनभिज्ञ हैं। 'किशनुली' के शास्त्री काका जो कि गाँव के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं, उन्हें भी हम असत् पात्रों की श्रेणी में रखेंगे, क्यों कि वे उपन्यास के पात्रों की नजर में तो प्रतिष्ठित हैं, लेकिन पाठक वर्ग जानता हैं कि पगली, किशुनली का दैहिक शोषण शास्त्री काका ही करते हैं।

'पूतों वाली' काकी के पाँचों पुत्रों ने उच्च पदों पर नियुक्त होते ही अपने माँ-बाप को भुला दिया इस दृष्टि से पाँचो पुत्र भी असत् पात्रों की त्रेणी में आते हैं।

इसके बाद शिवानी जी के उपन्यासों में ऐसे पुरूषपात्र भी आते हैं जो विवश परिस्थितियों में फँसे हैं और शोषण व अत्याचार को बिना कुछ बोले सह रहे हैं। ऐसे पात्र डरपोक हैं प्रत्येक स्थिति सा बदलाव ये भाग्य से चाहते हैं, वय से नहीं। इस तरह के पात्रों में 'मायापुरी' का सतीश व 'कृष्णकली' का प्रवीर दोनों ही सटीक बैठते हैं। ये दोनों ही अच्छे चरित्र के युवक हैं, लेकिन, अपने-अपने प्रेम सम्बन्धों को परिवार के समक्ष नहीं रख पाते और परिवार द्वारा तय रिश्तों को अपनाकर विवाह कर तो लेते हैं, परन्तु सुखी नहीं रह पाते। इसके विपरीत शिवानी के उपन्यासों में ऐसे पात्र भी हैं जिन्होंने अनीति के विरूद्ध आवाज उठाई हैं, जैसे- 'श्मशान चम्पा' में नायिका की छोटी बहन के अन्तर्जातीय विवाह कर लेने के कारण नायक मधुकर का परिवार नायिका से विवाह तोड़ देता हैं , लेकिन मधुकर नायिका को अपनाना चाहता हैं, व अपने इस प्रस्ताव को नायिका के समक्ष रख देता हैं। इसी तरह 'कालिन्दी' की नायिका कालिन्दी का विवाह एक डॉक्टर से तय हो जाता

है, मगर दहेज न जुटा पाने के कारण रिश्ता टूट जाता है, दहेज जैसी लालची प्रवृत्ति के विरूद्ध खड़े होकर नायक डॉक्टर कालिन्दी को अपनाने आता है, जो कि उच्च मानसिकता व साहस का प्रतीक है। शिवानी के 'रश्या' नामक उपन्यास के पात्र विमलानन्द ने तो अन्याय के खिलाफ ऐसी आवाज उठाई हैं कि ऐसा साहस सहज में ही नहीं दिखाई देता। 'रथ्या' की नायिका बसन्ती जो कि विमलानन्द को प्रेम करती हैं, लेकिन दोनों की कुण्डली न मिल पाने की वजह से उनका विवाह नहीं हो पाता। बसन्ती इस सदमें को सह नहीं पाती और रात के अन्धेरे में घर छोड़ देती हैं। भोली गाँव की सरला बसन्ती शहर में पहुँचकर अपना कौमार्य नहीं बचा पाती और वेश्यावृत्ति की तरफ धकेली जाती हैं। लम्बे समय के बाद विमलानन्द उसे मिलता हैं, अब विमलानन्द शादीशुदा होने के साथ-साथ पिता भी हैं। इस सब के बावजूद भी विमलानन्द बसन्ती को उस बुराई से निकाल कर अपने साथ गाँव ले जाना चाहता है। ये तीनों पात्र बुराई के विरूद्ध खड़े हुए हैं। ये बात अलग हैं कि इन तीनों में से किसी के भी साथ नायिकाएँ नहीं जाती हैं।

शिवानी जी की औपन्यासिक कृत्तियों में प्रत्येक आयु वर्ग के पात्र हैं, जिनमें युवा वर्ग में पुरूष पात्र हैं, 'कालिन्दी' में देवेन्द्र, एल्फी, पिंटू दा, बिरजू, 'अतिथि' के कार्तिक और शेखर, रोहिताश्व दत्ता, वेद, कौस्तुभ (स्वयंसिद्धा). 'चौदह फेरे' में रौनेन, रेक्सी और राजू दा, 'भैरवी' में विक्रम, 'श्मशान चम्पा' के धरणीधर, मधुकर, तनवीर, 'उपप्रेती' के उप्रेती, नन्हें (कस्तुरी मृग) विमल (रथ्या), 'सुरंगमा', में रोबर्ट और कार्तिक दा, 'कैजा' में सुरेश भट्ट, 'कृष्णवेणी' का भास्करन, 'मायापुरी' के सतीश और अविनाश, विक्रम कापड़िया (रति विलाप)। शिवानी के उपन्यासों में युवा वर्ग के अलावा अधेड़ उम्र के पात्र भी अपना नियत स्थान रखते हैं, जिनमें हैं, 'कालिन्दी' के मि. वर्मा, 'अतिथि' के माधवबाबू और श्यामचरण, 'चौदह फेरे' में शिवदत्त, रेवतीरमण, 'चल खुसरो घर आपने' के राजा

राजकमल और रघु काका, बड़े मालिक (कस्तुरी मृग) बड़े वैद्य (रथ्या), शिवसागर और बदरीप्रसाद (पूतोंवाली), गजानन, गौरप्रसन्न (सुरंगमा), जनार्दन तिवारी जी (मायापुरी), (रति विलाप) में करसनदास कापड़िया।

(ख) स्त्री पात्र –

पुरूष पात्रों की भाँति शिवानी जी ने नारी के सच्चरित और दुश्चरित, अच्छे और बुरे सभी भिन्न-भिन्न रूपों को उनकी परिस्थितियों में अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया हैं।

शिवानी जी के उपन्यासों के लगभग सभी नारी पात्र धैर्य और समझदारी का परिचय देते हैं। इन नारी पात्रों में जो सहनशीलता हैं, वह काल्पनिक न होकर धरा की व्यथा से जुड़ी हैं। ये नायिकाएँ अपने पति के प्रति अनन्य भाव रखने वाली हैं, इस तरह की नायिकाओं में जो नारी पात्र आते हैं उनका परिचय इस तरह हैं-

कालिन्दी और अन्ना (कालिन्दी), माया व जया (अतिथि), 'चौदह फेरे' में अहल्या व नन्दी, 'विषकन्या' की दामिनी, 'भैरवी' में चन्दन, कुमुद और मरियम (चल खुसरो घर आपने), 'स्वयंसिद्धा, की माधवी, भगवती व चम्पा (श्मशान चम्पा), 'उपप्रेती' में रमा, कनक, अम्मा (कस्तुरी मृग), 'पूतों वाली' में पार्वती, वैरोनिका, सुरंगमा (सुरंगमा), नन्दी तर्वे 'कैजा', कृष्णवेणी (कृष्णवेणी), 'मायापुरी' में शोभा, दुर्गा, मंजरी रानी जी, 'रति विलाप' में अनुसूया।

सत् नारी पात्रों की शिवानी जी की कृत्तियों में कमी नहीं हैं, लेकिन इन नारी पात्रों के अलावा असत् नारी पात्रों का चित्रण भी शिवानी जी के उपन्यास में हुआ हैं। ये नारियाँ अपने आप में उलझी सी, वक्र स्वभाव वाली, अन्तर्द्वन्द्व के चक्र में फँसी, परगमन व एकाधिक पुरूषों से सम्बन्ध रखने वाली भी हैं, जैसे, 'अतिथि' की लीना, चन्द्रा 'गैंडा' की सुवर्णा दत्ता व राज, 'स्वयंसिद्धा' की राधिका, 'चौदह फेरे' में मल्लिका, 'विषकन्या' में कामिनी, 'भैरवी' में माया व चन्द्रिका, 'चल खुसरो

घर आपने'में रमा, 'श्मशान चम्पा' में जुही, जया और 'रति विलाप' की हीरा।

इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे नारी पात्र भी हैं, जिन्हें केवल असत् या सत् पात्रों की श्रेणी में ही नहीं रखा जा सकता। ऐसे नारी पात्रों में 'चल खुसरों घर आपने' में मालती, गौरी चाची, 'श्मशान चम्पा' में रूक्की बुआ, 'उपप्रेती' में नन्दी, 'रथ्या' में बसन्ती, 'सुरंगमा' में राजलक्ष्मी, सरूली व विनिता, 'माणिक' में दीना बाटलीवाला, रम्भा, 'कृष्णवेणी' में कृष्णवेणी की मम्मी और मायापुरी की सविता के नाम गणनीय हैं।

शिवानी जी ने अपने उपन्यासों में विभिन्न आयु वर्ग की महिला पात्रों का चित्रण किया है जिनमें मुख्य हैं-

बालिकाएँ-

'कालिन्दी' उपन्यास की कालिन्दी का शैशव हरे-भरे सम्पन्न उपमापूर्ण पारिवारिक वातावरण में बीता है। चौदह फेरे' की अहल्या के पिता शिवदत्त पाणडेय वैसे तो उद्योगपति थे, परन्तु पत्नी नंदी को गवांर और फूहड़ होने के कारण छोड़ रखा था। नंदी अपने गरीब भाई-भौजी के साथ रहती हैं जिसके कारण बालिका अहल्या का शैशव अभावों में बिता था। अतः जब नंदी उसे लेकर उसके पिता के पास जाती हैं तब अहल्या खाने-पीने की चीजों पर टूट परती हैं।

उसकी माँ जब डांटती हैं तब अहल्या कहती हैं-''हाँ फिर मामा ने दालमोठ ले दी थी, बिस्कुट थोड़े ही न ले दिये थे आ हा, इनके बीच मीठा भरा हैगा। मुन्ना, चुन्ना और दिपा आयेंगे तो धत्ता दूँगी सालों को।''[1]

यहाँ पर लेखिका शिवानी ने बालिका अहल्या का चित्रण बालसुलभ मनोवृत्तियों के अनुसार किया हैं। बाद में कर्नल शिवदत्त पाण्डेय अहल्या को बोर्डिंग स्कुल में भर्ती करवा देता है। अतः अन्य सुख-सुविधाओं को तो वह प्राप्त कर लेती

1-चौदाह फेरे - शिवानी- पृ- 13

हैं, पर माता के प्रेम से वह वंचित रह जाती हैं।

'तर्पण' की नायिका पुष्पापंत के साथ बचपन में एक व्यक्ति बलात्कार करता हैं जिसके कारण उसका पूरा घर बर्बाद हो जाता हैं। 'कैजा' उपन्यास में एक आठ वर्षीय बच्ची पर बलात्कार के बाद वह उस लड़की की हत्या भी कर देता हैं। हमारे सम्भ्रान्त समाज में ऐसा कई बार घटित होता हैं।

युवतियाँ–

कालिन्दी, माधवी (कालिन्दी), चन्दन, चरण (भैरवी), नंदी, अहल्या, मल्लिका (चौदह फेरे) इन युवतियों का मार्ग अनेक कंटकों से भरा हुआ हैं उन्हें अपने जीवन यापन के लिए संघर्षो से गुजरना पड़ा हैं। उनके चरित्र बहुत तेजस्वी और जाज्वल्यमान बन पड़े हैं। उनमें भारतीय नारी को अग्रसरित करने की क्षमता पाई जाती हैं। जहाँ नगरीय परिवेश की अनेक उच्चवर्गीय स्त्रियों का चरित्र निष्तेज और लघ्घरसा दिखता हैं, वहां ग्रामीण परिवेश की इन युवतियों में जीवन का एक उन्मेंष मिलता हैं। वे निर्द्वद्ध और कुण्ठा रहित प्रतीत होती हैं।

'भैरवी' उपन्यास की चन्दन और चरन एक अन्य आयाम को परिलक्षित करती हैं, जिसमें तंत्र साधना के नाम पर युवतियों को फंसाया जाता हैं।

प्रैढ़ाएं–

सुभद्राताई (चौदह फेरे), राजेश्वरी, माया, विष्णु प्रिया (भैरवी) अन्ना, शिला (कालिन्दी) आदि प्रौढ़ महिलाओं के चरित्र सविशेष रूप से परिलक्षित होते हैं। 'चौदह फेरे' की सुभद्राताई एक उजड्ड और मुंहफट औरत हैं।

वह किसी की परवाह नहीं करती शिवदत्त पाण्डेय जो कई फैक्टरियों का मालिक हैं, उनको भी वह आड़े हाथों लेती हैं। उनका व्यक्तित्व रौबिला हैं। इसके ही कारण तीन-तीन पढ़ी-लिखी सुशिक्षित बहुओं पर अपना रूबाब जमाये हुए रहती हैं।

'भैरवी' उपन्यास की राजेश्वरी एक सुसम्पन्न, भद्र तथा आधुनिक महिला हैं। उनकी बहुएँ भी उनके सामने जीन्स पहन कर आती हैं। इसी उपन्यास की माया विधवा होकर एक नाथ पंथी साधु के जा बैठती थी? प्रयाग के कुंभ मेंले में स्वामी भैरवानंद से आकृष्ट होकर उनके अखाड़े में आ गई थी। विष्णुप्रिया वैष्णव सम्प्रदाय की एक साध्वी हैं, उपन्यास में संकेतित हुआ हैं कि इन दोनों महिलाओं के उनके गुरूओं से शारीरिक सम्बन्ध रहे हैं।

(ब) कथानक में पात्र के महत्व के आधार पर–

इस आधार पर सामानयतः पात्रों को दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता हैं-

(क) प्रमुख पात्र

(ख) गौण पात्र

(क) प्रमुख पात्र –

प्रमुख पात्र उसे कहते हैं, जिस पर उपन्यास या कहानी का मूल अभिप्राय केन्द्रित होता हैं और जिसके बल पर कहानी या उपन्यास में गति रहती हैं। ऐसे पात्र स्थिर व अपरिवर्तनशील होते हैं, इन्हीं पर पूरी कथा निर्भर होती हैं। ये पात्र कथा में आरम्भसे अन्त तक उपस्थित रहते हैं, लेखक इन्हीं के माध्यम से ही अपने विचारों, मुल्यों, मान्यताओं और आदर्श को पाठक के लिए प्रक्षेपित करता हैं।

इस दृष्टि से शिवनी जी के पात्रों की एक दीर्घ तालिका हैं, जो उनके उपन्यासों के आधार पर निम्नवत् पस्तुत हैं-

कृष्णकली –

इस उपन्यास की प्रमुख पात्र कृष्णकली हैं, जिसके जीवन के आरम्भ से लेकर अन्त तक का ताना-बाना कृष्णकली के इर्द-गिर्द बुना हैं।

कालिन्दी –

इस उपन्यास की प्रमुख पात्रा कालिन्दी हैं, जो कि एक डॉक्टर हैं। दहेज जैसी कुप्रथा के खिलाफ खड़ी होती कालिन्दी के जीवन की गाथा इस उपन्यास में समाहित हैं।

अतिथि –

अतिथि की नायिका जया उपन्यास की प्रमुख पात्रा हैं। जया एक स्वाभिमानी लड़की हैं, जो अपने पति की बुरी आदतों से परेशान होकर उससे अलग हो जाती हैं और आई.ए.एस. के पद पर नियुक्त हो आत्मनिर्भर बनती हैं।

गैंडा –

'गैंडा' की प्रमुख पात्र सुवर्णा दत्ता हैं, जो अहंकारी होने के साथ-साथ अन्धविश्वासी भी हैं। सुवर्णा दत्ता अपने पति को बँटता नहीं देख पाती और हर सम्भव प्रयास करती हैं, अपनी सहेली को रास्ते से हटाने के लिए। इस उपन्यास के माध्यम से शिवानी ने यह साबित किया है कि नारी सब कुछ बर्दाश कर सकती हैं, मगर अपनी सौत नहीं।

स्वयंसिद्धा –

स्वयंसिद्धा की प्रमुख पात्र माधवी हैं, जिसके अविवेक के इर्द-गिर्द पूरी कथा चलती हैं। सर्वगुणसम्पन्न माधवी अपने अविवेकी चित्त के वशीभूत ही अपना जीवन बदल देती हैं।

चौदह फेरे –

'चौदह फेरे' में अहल्या नाम की लड़की प्रमुख पात्र हैं। अहल्या एक ऐसी चरित्र हैं, जिसका बचपन बिखरा हुआ हैं, माँ-बाप के सम्बन्ध-विच्छेद, सौतेली माँ, अपने पराये रिश्ते इन्हीं के बीच जीती अहल्या को घेरे उपन्यास की कथा चलती हैं।

विषकन्या –

'विषकन्या' की प्रमुख पात्र कामिनी एक अविश्वसनीय चरित्र होकर भी विश्वसनीय हैं। कामिनी के मुँह से निकली किसी भी वस्तु की प्रशंसा उस वस्तु का विनाश बनती हैं, यही अविश्वास हैं, लेकिन ऐसा जीवन में भी देखने को मिलता हैं, तब यही बात विश्वास करने पर मजबूर कर देती हैं। ऐसे चरित्र वाली कामिनी को इंगित कर उपन्यास का नाम विषकन्या रखा हैं।

भैरवी –

उपन्यास की नायिका चन्दन हैं। जो कि परिस्थितिवश भैरवी बना दी जाती हैं। एक स्त्री के भाग्य की मार्मिक गाथा 'भैरवी' में चन्दन के जीवन को कथानक बना कर प्रस्तुत किया हैं।

चल खुसरों घर आपने –

कुमुद नाम की लड़की के इर्द-गिर्द घूमती उपन्यास की कथा हैं 'चल खुसरों घर आपने' जिसमें कुमुद प्रमुख पात्र हैं।

श्मशान चम्पा–

उक्त उपन्यास की प्रमुख पात्रा चम्पा हैं, जो समाज से टक्कर लेकर अपने नियत लक्ष्य तक पहुँचती हैं। चम्पा जिसे अपनी भ्रमित हुई बहिन की सजा भुगतनी परती हैं, लेकिन वह आत्मविश्वास से अडिग रहती हैं।

उपप्रेती –

पहाड़ में एक गर्भवती महिला के शव को जलाने से पहले वहाँ के नियमानुसार शव से गर्भस्थ शिशु को बाहर निकाला गया तो वह जीवित निकला वही शिशु 'उपप्रेती' कहलाया। पहाड़ की इसी घटना को स्मृति में रखकर इस उपन्यास का नाम उपप्रेती पड़ा। उपन्यास का नायक मृत्यु से जूझकर बचा हैं और दोहरी जिन्दगी जी रहा हैं, यही दोहरी जिन्दगी इस उपप्रेती की देन हैं।

कस्तूरी मृग –

'नन्हें' एक भ्रमित पिता की सन्तान है, उपन्यास का प्रमुख पात्र होने के कारण पूरा कथानक नन्हें के चारों ओर डोलता है, नन्हें में एक नायक होने के सभी गुण विद्यमान हैं।

रथ्या –

'रथ्या' का कथानक 'बसन्ती' और 'विमल' दोनों को समान रूप से साथ लेकर चलता हैं, ये निर्णय कर पाना कठीन है कि प्रमुख पात्र कौन है, लेकिन बसन्ती पर पूरी कथा टिके रहने के कारण बसन्ती ही प्रमुख पात्र हैं।

पूतों वाली –

'शिवसागर' और 'पार्वती' दोनों ही पात्र उपन्यास में समान रूप से अपना स्थान रखते हैं। वैसे शिवसागर की तुलना में पार्वती का चरित्र अधिक उद्दाम हैं, लेकिन शिवसागर अपने ही चरित्र के साथ पार्वती की बराबरी में टिका हैं।

सुरंगमा –

उपन्यास की नायिका सुरंगमा पूरे कथानक में विद्यमान हैं। सुरंगमा शिक्षित होने के बावजूद इतनी कमजोर हैं कि अपने आप को अपनी मर्जी से एक मंत्री को सौंप देती हैं।

माणिक –

प्रमुख नायिका 'दीना बाटलीवाला' एक-एकाकिनी महिला हैं। इस उपन्यास की प्रमुख पात्रा के माध्यम से शिवानी ने जबरन दबाई गई यौन उत्कण्ठा के कारण पैदा हुआ समलैंगिक आकर्षण बताया हैं।

कैंजा –

प्रमुख पात्रा नन्दी तर्वे एक बिगड़े हुए इन्सान व उसकी नाजायज औलाद के लिए अपना जीवन समर्पित कर देती हैं।

कृष्णवेणी –

उपन्यास में प्रमुख चरित्र 'कृष्णवेणी' का हैं, जो अपने प्रेम के लिए समर्पित हैं।

मायापुरी –

जीवन की कठीनतम परिस्थितियों से जूझती 'शोभा' उपन्यास की प्रमुख पात्र हैं। जीवन में आये प्रत्येक पड़ाव को पार करती शोभा पाठकवर्ग के लिए एक प्रेरणा बनी हैं।

रतिविलाप –

'अनुसूया' नामक लड़की स्वयं के जीवन में आये वैचित्र्य को न निगल सकने पर भी निगलती हैं, आत्मविश्वासी अनसूया पाठकों के लिए एक आदर्श बन गई हैं।

(ख) गौण पात्र –

गौण या सहायक पात्र उनको कहते हैं, जो विभिन्न परिस्थितियों के निर्माण करने और घटनाओं को आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं। इनका प्रमुख कार्य नायक या नायिकाओं के चरित्र विकास में सहायक होते हैं। इनका चरित्र गहरा न होने के कारण इन्हें सपाट चरित्र भी कहते हैं। ''इन सहायक पात्रों को अंग्रेजी में अक्सर 'फ्लेट पिन' या 'डिस्क' चरित्र नाम दिया गया हैं।''[1]

वैसे ये पात्र महत्वहीन नहीं होते, क्योंकि ये भी अपनी भूमिकाओं में प्रभाव छोड़ने वाले होते हैं। मुख्य पात्र की श्रेष्ठता उभारने व कथा के बिखरे सूतों को जोड़ने में यही पात्र सहायक होते हैं। शिवानी के उपन्यासों में इनकी अच्छी संख्या दृष्टिगोचर होती हैं। जो इस प्रकार हैं, 'कृष्णकली'-पार्वती, असदुल्ला, मुनीर, विद्युतरंजन, राणा, जमींदार रहमतुल्ला, रजनीकाका, चारू, बिल्कीज, मैगी, सोनिया,

1- द आस्पेकट्स ऑफ द नोबल- एडबर्ड अरनोतड एण्ड कम्पनी - ई-एम फार्स्टर पृ-65

लिज, नवाब शमशुद्धीन, रेवरेण्ड मदर, वाणी सेन, बेला सेन, रेवती शरण तिवारी, सुवीर, चम्पा, जया. माया अम्मा, विवियन, बॉबी, आण्टी, श्यामकुमार, पण्डाजी, सरदार, लौरीन, शेखरन, कुन्नी आदि। 'कालिन्दी'-देवेन्द्र, अन्ना, एल्फी, पिंटूदा, मि.वर्मा, सरोज, बिरजू। 'अतिथि'-जया, माधवबाबू, श्यामाचरण, कार्तिक, लीना, चन्द्रा, माया, कनक, ताई, शेखर। 'गेंडा'-सुवर्णा दत्ता, राज रोहिताश्व दत्ता, वेद। 'स्वयं सिद्धा'-कौस्तुभ, राधिका। 'चौदह फेरे' विल्सन; रेवतीशरण, मल्लिका, रौनेन, खेसी, बसंती, राजू दा, ताई, धरणीधर; सर्वेश्वर। 'विषकन्या'-दामिनी। 'भैरवी'-माया, चरन, चाची, राजेश्वरी, चन्द्रिका, विक्रम। 'चल खुसरो घर आपने'-मरियम, उमा, नूरबक्श, दौर चाची, मालती, लालू, रघू काका। 'श्मशान चम्पा'-भगवती, जूही; धरणीधर, मधुकर, मिनी , कमलेश्वरी, रूक्की बुआ, जया, तनवरी। 'उपप्रेती'-नन्दी। 'कस्तुरी मृग'-कनक, अम्मा। 'रथ्या'-विमल, बड़े वैद्य। 'पूतोवाली'-बदरी प्रसाद। 'सुरंगमा'- मिनी; राजलक्ष्मी, गजानन, रोबर्ट, वैरोनिका सरूली, मीरा, विनीता, गौर प्रसन्न, कार्तिक दा। 'माणिक'-लक्ष्मी, रंभा। 'कैजा'-रोहित चन्द्र, सुरेश भट्ट,। 'कृष्णवेणी'-भास्करन, डैडी, मम्मी। 'मायापुरी'-गोदावरी, दुर्गा, मिट्ठू, मंजरी, सविता, अविनाश, जनार्दन, तिवारी, रानी जी, 'रति विलाप'-करसनदास कपाड़िया, हीरा, विक्रम कपाड़िया।

(स) चारित्रिक विशेषताओं की दृष्टि से पात्रों के भेद-

(क) प्रतिनिधि या वर्गगत

(ख) व्यक्तित्व प्रधान

प्रत्येक व्यक्ति के दो रूप होते हैं-एक सामान्य और दूसरा विशिष्ट। इसी आधार पर सामान्य को प्रतिनिधि या वर्गगत और विशिष्ट को व्यक्तित्व प्रधान पात्र माना जाता हैं।

(क) <u>प्रतिनिधि या वर्गगत पात्र</u> –

इन्हें 'टाइप्ड' पात्र भी कहते हैं। क्यों कि ये पात्र किसी विशेष वर्ग, जाति, समूह या विचार का प्रतिनिधित्व करने वाले होते हैं। इन पात्रों के चरित्रांकन की सफलता वातावरण या माहौल विशेष को उभारने में विशेष सहायक होती हैं। वैसे ''टाइप में सम्पूर्ण मानवीय और सामाजिक तत्वों का अपनी चरम सीमा तक विकसित होना आवश्यक हैं। साथ ही इन मानवीय और सामाजिक तत्वों में सभी सम्भावनाओं का उद्घाटन हो जाना चाहिए।''[1]

शिवानी के उपन्यासों में ऐसे अनेक पात्र मिलते हैं, कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं, 'कालिन्दी' में देवेन्द्र, मि. वर्मा, 'अतिथि' में माधवबाबू, श्यामाचरण और शेखर, 'गेंडा' में वेद, 'स्वयंसिद्धा' में कौस्तुभ और राधिका, 'चौदह फेरे' शिवदत्त, मल्लिका, विल्सन, 'विषकन्या' में कामिनी, 'भैरवी' में माया, विक्रम, 'चल खुसरो घर आपने' में राजा राजकमल और मरियम, 'श्मशान चम्पा' में धरणीधर, मधुकर, 'उपप्रेती' में रमा, 'कस्तुरी मृग' में नन्हें, बड़े मालिक, 'रश्या' में विमल, 'पूतोंवाली' में पार्वती, शिवसागर, बदरीप्रसाद। 'सुरंगमा' में मिनी, वैरोनिका, 'माणिक' में नलिनी मिश्रा, 'कैंजा' में नन्दी तर्वे, 'कृष्णवेणी' में कृष्णवेणी व भास्कर, 'मायापुरी' में अविनाश व मंजरी, 'रति विलाप' में अनसूया, 'कृष्णकली' में डॉ. पैट्रिक, पन्ना और प्रवीर।

(ख) <u>व्यक्तित्व प्रधान पात्र</u> –

ऐसे पात्रों की अपनी निजी विशेषताएँ अधिक होती हैं और परिवर्तनशीलता इनका स्वाभाविक लक्षण होता है। इनकी गतिविधियाँ आवश्यकता और समय के अनुसार बदलती रहती हैं। इसलीए इन्हें परिवर्तनशील या गतिशील पात्र भी कहते हैं।

1- यशपाल व्यक्तित्व और कृतित्व, संस्करण, 1970, डॉ. सरोज गुप्ता, पृ- 292

अंग्रेजी में ऐसे पात्रों को 'राउण्ड कैरेक्टर' भी कहा गया हैं। वस्तुतः फ्लैट के अन्तर्गत वे पात्र आते हैं जो मूलतः एक ही विचार व विशेषता के चारों और घुमते हैं। परन्तु जैसे ही उनका केन्द्रीय विचार एक से अधिक हो जाता हैं, तब उन्हें 'राउण्ड' की संज्ञा दी जाने लगती हैं। व्यक्तित्व प्रधान पात्र भीड़ में भी अपनी व्यक्तिगत पहचान के कारण पृथक् दिखाई पड़ते हैं।

शिवानी जी के कालिन्दी और बिरजू, 'अतिथि' में जया व शेखर, गेंडा में राज, स्वयंसिद्धा का कौस्तुभ, चौदह फेरे में राजूदा, विषकन्या की कामिनी, भैरवी की चन्दन, चल खुसरों घर आपने के राजा राजकमल, श्मशान चम्पा में मधुकर कस्तूरी मृग में अम्मा, रथ्या में विमल, पूतों वाली की पार्वती, सुरंगमा की वैरोनिका 'कैंजा' की नन्दी, कृष्णवेणी की कृष्णवेणी, कृष्णकली की डॉ. पैट्रिक आदि पात्र इसी श्रेणी में गिने जा सकते हैं।

(द) <u>पात्रों का आर्थिक आधार पर वर्गीकरण</u> -

इस आधार पर पात्र के कई प्रकार माने गये हैं-

(क) उच्च वर्गीय पात्र

(ख) मध्यवर्गीय पात्र -

(1) उच्च मध्यर्गीय पात्र,

(2) मध्य मध्यम वर्गीय पात्र,

(3) निम्न मध्यम वर्गीय पात्र,

(ग) निम्न वर्गीय पात्र।

(क) <u>उच्च वर्गीय पात्र</u> -

इस वर्ग के पात्र अपेक्षाकृत कम ही शारीरिक परिश्रम करते हैं। ये विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।

शिवानी जी के रचित उपन्यासों में ऐसे पात्रों के कई उदाहरण दिखाई पड़ते

हैं, जैसे, 'अतिथि' में कार्तिक, लीना, 'चौदह फेरे' का शिवदत्त, 'चल खुसरो घर आपने' में राजा राजकमल, 'कस्तूरी मृग' में बड़े मालिक, 'सुरंगमा' की विनीता, 'मायापुरी' में रानी जी ओर 'कृष्णकली' में विद्युतरंजन मजूमदार व जमींदार रहमतुल्ला।

(ख) मध्यमवर्गीय पात्र -

इस वर्ग के पात्र अपने जीवन के रहन-सहन में मध्यवर्गीय होते हैं। इनमें से भी कुछ पात्र ऐशो-आराम पूर्ण जीवन जीते हैं। इस वर्ग के पात्रों को पुनः तीन श्रेणीयों में विभाजित किया हैं-उच्च मध्यवर्गीय, मध्य मध्यम वर्गीय, निम्न मध्यम वर्गीय पात्र।

1) उच्च मध्यम वर्गीय पात्र -

ऐसे पात्र अपने परिश्रम एवं प्रयत्न के फलस्वरूप ऐश्वर्यपूर्ण सम्पन्नता का जीवन जीते हैं। ऐसे पात्रों में शिवानी कृत 'कालिन्दी' में कालिन्दी, मि. वर्मा, 'कृष्णकली' में प्रवीर, कृष्णकली, 'अतिथि' में माधवबाबू , शेखरचन्द्र, 'गेंडा' में वेद रोहिताश्व दत्ता, 'स्वयं सिद्धा' में माधवी, 'चौदह फेरे' में राजूदा व रौनेन, 'विषकन्या' में कामिनी, 'कृष्णवेणी' में कृष्णवेणी, 'चल खुसरो घर आपने' में कुमुद, 'श्मशान चम्पा' में चम्पा, धरणीधर, मधुकर, 'कस्तुरी मृग' में नन्हें, 'माणिक' में दीना बाटलीवाला पात्र उल्लेखनीय हैं।

2) मध्य मध्यमवर्गीय -

जो पात्र न तो उच्च मध्यम वर्ग में आते हैं और न ही निम्न मध्यम वर्ग में गिने जाते हैं, ऐसे पात्र मध्य मध्यम श्रेणी में रखे जाते हैं। शिवानी जी ने अपने उपन्यासो में ऐसे पात्रों को स्थान दिया हैं, जिनमें, 'कालिन्दि' में देवेन्द्र, 'अतिथि' में श्यामचरण, 'स्वयंसिद्धा' में कौस्तुभ, 'चौदह फेरे' में विल्सन, 'चल खुसरो घर आपने' में मरियम, 'कस्तुरी मृग' में कनक, 'पूतों वाली' में शिवसागर, 'सुरंगमा'

में सुरंगमा, 'कैंजा' में नन्दी तर्वे, 'रति विलाप' की अनुसूया इसी प्रकार के पात्र हैं।

(३) निम्न मध्यम वर्गीय पात्र –

ऐसे पात्र आर्थिक दृष्टि से निर्बल ही होते हैं, लेकिन समाज में इनका अपना एक स्थान होता हैं।

इस प्रकार के पात्र शिवानी के दो ही उपन्यासों में मुख्य रूप से दिखाई देते हैं, जिनमें 'कालिन्दी' की सरोज और 'मायापुरी' की शोभा हैं, ये दोनों ही पात्र आर्थिक रूप से कमजोर होने पर भी अपने-अपने स्थान पर टिके हैं।

(ग) निम्न वर्गिय पात्र –

इस प्रकार के पात्र आर्थिक और सामाजिक दोनों ही दृष्टियों से निर्बल होते हैं।

शिवानी के उपन्यासों में ऐसे पात्र अपना स्थान रखते हैं, जिनमें से कुछ हैं, 'कालिन्दी' का एल्फी, 'चल खुसरो घर आपने' के रघु काका, 'उपप्रेती' की रमा, 'रश्या' की विमलानन्द, 'पूतों वाली' का बदरी प्रसाद, 'कैंजा' का सुरेश भट्ट, 'मायापुरी' की दुर्गा, 'रतिविलाप' की हीरा 'कृष्णकली' के असदुल्ला खान, दामोदर, नवीन इत्यादि ऐसे ही पात्र हैं।

कार्य या पद के आधार पर –

शिक्षिकाएँ –

नवजारण की भूमिका में नारी शिक्षा को सर्वाधिक प्राधान्य दिया गया, प्रेमचन्द के पूर्व भारतेन्दुकाल के अनेक लेखको ने नारी-शिक्षा की हिमायत की हैं। शिक्षित होने के उपरान्त महिलाओं के लिए सर्वाधिक सुलभ-सुविधाजनक एवं सम्मानित पद शिक्षिका का होता हैं। शिवानी कृत 'विवर्त' उपन्यास की ललिता 'दो सखियाँ की सखूबाई', 'तर्पण' की पुष्पा।

'विवर्त' की नायिका ललिता एक सुशिक्षित, स्वाभिमानी और जुझारू नारी हैं। आर्थिक दृष्टि से वह आत्मनिर्भर हैं क्यों कि गाँव की स्कुल में प्रधानाध्यापिका के रूप में कार्यभार संभाल रही हैं। ललिता को अपने विवाह में धोखा होता है जब वह अपने पति के साथ में रहने के लिए विदेश में जाती हैं तो इसे पता चलता हैं कि वह पहले से ही शादीशुदा हैं। वह स्वदेश लौट आती हैं। उसने अपनी नौकरी से त्यागपत्र नहीं दिया था, अतः वह पुनः अपने कार्य में संलग्न हो जाती हैं।

'दो सखियाँ' की सखूबाई भी एक शिक्षिका हैं।

'तरपण' की नायिका 'पुष्पापंत' भी गाँव के एक स्कूल में अध्यापिका हैं। पुष्पा पंत को एक आदर्श, प्रतिबद्ध अनुशासनप्रिय और छात्रावत्सला अध्यापिका के रूप में चित्रित किया गया हैं।

नर्स-मिडवाइफ -

'कालिन्दी' तथा 'श्मशान चम्पा' उपन्यास में कहीं-कहीं इस प्रकार के पात्रों का चित्रण मिलता हैं।

डॉक्टर -

शिवानी कृत 'कृष्णकली' की डॉ. पेदरिक उर्फ रोजी, 'कालिन्दी' की कालिन्दी तथा 'स्मशान चम्पा' की डॉ. चम्पा। 'कृष्णकली' की रोजी एक मिशनरी डॉक्टर हैं जो अल्मोड़ा के कुष्ठाश्रम में अपनी सेवाएं प्रदान करती हैं। 'श्मशान चम्पा' की चम्पा तथा 'कालिन्दी' की कालिन्दी मध्यमवर्ग के परिवार की लड़कियाँ हैं और अत्यन्त संघर्ष के बाद अपनी प्रतिभा के बल पर डॉक्टरी के पद तक पहुँच गई हैं।

दूसरे परिवारों में नौकरी-चाकरी का काम करने वाली महिलाऐं -

शिवानी के प्रायः उपन्यासों में ऐसी काम वाली बाइयों का चित्रण हुआ हैं। इन स्त्रियों में संघर्ष और जुझारूपन का माद्दा सबसे ज्यादा पाया जाता हैं। जिन

घरों में वे काम करती हैं उनके प्रति भी उनके मन में वफादारी का भाव मिलता हैं। 'चौदह फेरे' 'कृष्णकली', श्मशान चम्पा, तर्पण, भैरवी, माणिक आदि उपन्यासों में ऐसी काम वाली बाईयों के चित्रण मिलते हैं, जिनका अपनी मालकिनों से काफी लगाव पाया जाता हैं।

नाटक, फिल्म, मॉडलिंग, एडवर्टाइजिंग, मार्केटिंग, टूरिंग -

'कृष्णकली' उपन्यास में कृष्णकली ये सभी कार्य करती हैं। कली की स्मार्टनेस तथा व्यावसायिक दक्षता देखते ही बनती हैं।

बड़े-बड़े व्यवसायों में लगी हुई महिलाऐ -

'कृष्णकली' प्रभूति उपन्यास में तथा 'रतिविलाप ' उपन्यास में हमें ऐसे दृढ संकल्पी महिला पात्र उपलब्ध हो जाते हैं। अनुसूया कपड़ों का व्यवसाय बड़ी कुशलता से चलाती हैं।

ऐयर होस्टेस -

'विषकन्या' उपन्यास की कामिनी ऐयर होस्टेस का कार्य करती हैं।

शिवानी के उपन्यासों में नारी चित्रण -

1. **नारी प्रेम और विवाह** -

साठोत्तर उपन्यासों में नारी का जो रूप अवतरित हुआ हैं, वह घर की चारदिवारी तक ही सीमित नहीं हैं वरन् ''नारीमात्र के हृदय में एक नयी आशा एवं निष्ठा, नये उत्साह और बल का संचरण हुआ हैं, उसके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई हैं। किसी भी क्षेत्र को ले लें, वह पुरूष से किसी भी अंश में कम नहीं हैं। साहित्य, कला, राजनीति, प्रशासकीय उच्च पद जहाँ भी उसने कदम रखा हैं, सफलता ने उसे मण्डित किया हैं।''[1]

ऐसी नारी के सौन्दर्य और प्रेम के बारे में जितनी व्याख्या शिवानी जी ने

1- मणिमाला की हंसी (स्त्री कितनी स्वतन्त्र) शिवानी- पृ- 150

की है, उतनी किसी और लेखिका ने नहीं। वैसे नारी और प्रेम को एक-दूसरे का पर्याय कहा जाये तो अतिशयोक्ति न होगी, जहाँ नारी हैं वहाँ प्रेम न हों यह हो ही नहीं सकता, बाहरी रूप से कठोर और कर्कशा नारी भी अपने भीतर एक सागर संजो कर रखती हैं, जिसमें अन्दर ही अन्दर प्रेम का ज्वार-भाटा चलता रहता हैं।

प्रेम एक वैयक्तिक धारणा हैं और विवाह एक सामाजिक धारणा हैं। शिवानी की नायिकाएँ प्रेम और विवाह के लिए पूर्णतः स्वतन्त्र हैं, उनके विचार में जीवन में प्रेम का प्रमुख स्थान होता है, बिना प्रेम के जीवन शुष्क व नीरस हैं, लेकिन प्रेम वही हैं, जो हमारे भीतर छिपे देवत्व का विकास करे। इसके विपरित ले जाने वाला प्रेम कुछ भी नहीं हैं। शिवानी ने अपने उपन्यास में 'रोमाण्टिक' लेकिन भारतीय आदर्शों के अनुकुल प्रेम को स्थान दिया है। इन्होंने स्वच्छन्द प्रेम को मान्यता प्रदान करा कर अपने साहस का परिचय दिया है। इस तरह का प्रेम जाति, धर्म, वर्ण आदि से बहुत ऊँचा उठा हुआ हैं, 'श्मशान चम्पा' में जूही इस तरह के प्रेम की जानकारी अपनी माँ को इस तरह देती हैं, ''नाम हैं मसूद अली। वाह-वाह, अब की ईद में समधियाने की सेवई खाएंगे हमारे पुरोहित जी और अब तुम्हारी कथा-वथा नहीं कराएंगे, समझी। मम्मी अब तो मौलूद कराएंगे लोकमणि पंत।''[1]

'कृष्णवेणी' में नायिका कृष्णवेणी जिससें प्रेम करती हैं, उसके पिता को कुष्ठ रोग हैं। कृष्णवेणी जब अपने प्रेमी से विवाह करने की अनुमति अपने पिता से माँगती हैं तब उसके पिता तुरन्त मना कर देतें हैं, कारण लड़के के पिता का कुष्ठ रोगी होना था। कृष्णवेणी साहस के साथ अपने पिता का सामना करती हैं, और दृढ़ स्वर में कहती हैं,''कोढ़ तो उसके पिता को हैं, यदि उसे भी होता, तब भी मैं उसे नहीं छोड़ती। में विवाह उसी से करूँगी।''[2]

1- श्मशान चम्पा- शिवानी- पृ- 12

2- कृष्णवेणी- शिवानी- पृ- 32

प्रेम में जितना त्याग होता जाता हैं वह उतना ही श्रेष्ठ हो जाता हैं। 'कैंजा' की नन्दी तर्वे इसी तरह का उदाहरण हैं। नन्दी का प्रेमी 'सैक्स मैनियाक' बन जाता है और एक विक्षिप्त लड़की के गर्भभार में उसे अकेला छोड़कर चला जाता हैं। नन्दी तर्वे उस विक्षिप्त लड़की के पुत्र को उसकी मृत्यु के बाद अपना पुत्र बनाकर शहर ले आती हैं। कुछ वर्षों पश्चात् नन्दी का दत्तक पुत्र अपने पिता के बारे में पूछता हैं तो नन्दी अपने अस्तित्व को मिटा कर सुरेश भट्ट के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखती हैं।

शिवानी जी ने 'पूतोंवाली' के माध्यम से यह सिद्ध किया हैं कि सच्चा प्रेम सौन्दर्य का मोहताज नहीं हैं। 'पूतोवाली' के शिवसागर शास्त्रीय सुन्दरता को आधार बना कर पार्वती को ब्याह लाते हैं, लेकिन प्रथम रात्रि को ही घूँघट की यवनिका पलटते ही उनका काल्पनिक दुर्ग भरभराकर ढ़ह गया, क्यों कि नाटे कद की काली, खच्चर की सी भावशून्य आँखों वाली पार्वती का एक भी अंग ऐसा नहीं जिसके सहारे शिवसागर जी पाते। आरम्भ होती हैं ऐसी जिन्दगी जब दिन भर बाहर गये शिवसागर रात्रि भर का सम्बन्ध रख पाते हैं। पार्वती निश्चल भाव से प्रेम करती रहती हैं और वार्धक्य में उसके प्रेम की जीत होती हैं।

'मायापुरी' में सतीश विवाह कहीं और कर लेता हैं, क्यों कि उसके पिता की वही मर्जी थी, लेकिन प्रेम शोभा को ही करता हैं, शोभा भी आजीवन कुंवारी रहकर सतीश कों ही चाहती हैं। उपन्यास के अन्त में सतीश के मृत शरीर पर अचेत पड़ी लड़की और कोई नहीं शोभा ही हैं। शोभा वह पा लेती हैं जो सतीश की ब्याहता पत्नी भी नहीं पा सकी।

शिवानी जी ने उपप्रेती में एक नया ही उदाहरण प्रस्तुत किया हैं। उपन्यास के नायक का विवाह तो होता हैं रमा से, लेकिन वह अपने छोटे भाई की पत्नी का पति बनकर रहता हैं। पूरी बारात की दुर्घटना में मृत्यु होने पर नई दुल्हन अपने

ज्येष्ठ को अपना पति समझ लेती हैं और कहती हैं कि 'तुम बच गये, तुम भी न बचते तो मैं क्या करती?' उसको जीवित रखने के लिए उपन्यास का नायक घर नहीं लौटता और अपने भाई की दुल्हन को अपनाकर अज्ञातवास ले लेता हैं।

2. <u>सामाजिक कुप्रथाओं के नारी पर प्रभाव का चित्रण</u> :

नारी कितनी ही शिक्षित व स्वतंन्त्र क्यों न हो जाये समय-समय पर उसे अपने निरीह होने का भान होता ही हैं। एक स्त्री अपने पति के समकक्ष पद पर आसीन हैं। वह उतना ही वेतन लाती हैं, उतने ही घण्टे दफ्तर में रहती हैं, फाइलें निबटाती हैं, अधीनस्थों पर शासन करती हैं, किन्तु घर लौटते ही वह फिर निरीह पत्नि हैं। पति को चाय देना, उसके कुरते का बटन टाँकना, बच्चों की फरमाइशे पूरी करना, नौकरों की समस्याएँ निबटना केवल उसी का कर्तव्य रह जाता हैं। भले ही पुरूष के साथ-साथ कन्धे सतर करके चलने वाली नारी पुरूष की बराबरी में हैं , लेकिन सामाजिक कुपथाओं का प्रभाव सिर्फ उसी पर पड़ता हैं, पुरूष पर नहीं।

दहेज एक सामाजिक विकार हैं और इसका सामना करीब-करीब हर औरत को करना पड़ता हैं, चाहे वह अशिक्षित हो, चाहे अर्द्धशिक्षित या उच्च शिक्षित। शिवानी ने इस कुप्रथा का चित्रण अपने कई उपन्यासों में किया हैं, जिनमें नायिकाएँ इस प्रकार के विकार से ग्रसित तो हुई हैं, परन्तु हारी नहीं। कालिन्दी की नायिका कालिन्दी पेशे से डॉक्टर हैं, इतने उच्च पद पर आसीन कालिन्दी की बारात दहेज के कारण लौट जाती हैं, ऐसा नहीं हैं कि नायिका के यहाँ धन का अभाव हैं, कालिन्दी मण्डप में से उठकर अपने करोड़पति ससूर से कह देती हैं कि मुझे आपका पुत्र नहीं खरीदना।

कालिन्दी के ही शब्दों में, ''बड़ा आश्चर्य हैं कि इतने समृद्ध व्यापारी होने पर भी आपकों अपना बेटा बेचना पड़ा वह भी कुल अस्सी हजार में।'' साहसी वधु बारात लौटा देती हैं लेकिन कभी विवाह नहीं कर पाती दूसरे शब्दों में कहे कि इस

सदमें से नहीं उभर पाती।

दहेज प्रथा के बाद शिवानी ने जिस ज्वलन्त समस्या को उठाया हैं वह हैं वेश्या जीवन जिसे कोई भी स्वेच्छा से नहीं अपनाता; बल्कि सामाजिक परिस्थितियाँ ही ऐसे जीवन को अपनाने पर विवश करती हैं। 'रथ्या' की बसन्ती भी सामाजिक विकृति की शिकार होकर वेश्या बनी हैं, उसका स्नेह विमलानन्द जब उससे इस रास्ते पर चल निकलने की वजह जानना चाहता हैं तो वह अपने अश्रुसिक्त कपोल विमलानन्द के चेहरे से सटाकर कहने लगी, ''उसी रात को मुझे बेटी-बेटी कहने वाला त्रिजुंग-सा मेंरा रक्षक मेंरा भक्षक बन गया। मैं जब सो रही थी, तब ही वह न जाने किस कुघड़ी में ताला खोल भीतर चला आया।''[1]

इसके बाद विमलानन्द अपने साथ बसन्ती को ले जाना चाह भी रहा था तो क्या? बसन्ती समाज के भय से उसके संग नहीं जा पायी, उसी दलदल में रह गई जहाँ उसकी नियति धँसते जाना था। इसी तरह 'कृष्णकली' की पन्ना वेश्यावृत्ति के मार्ग को त्यागकर भी 'वेश्या' नाम उसके साथ जीवन पर्यन्त रहता हैं।

3. सामाजिक बन्धनों के परिप्रेक्ष्य में नारी : समर्पण की अभिव्यक्ति

प्राचीन काल से ही सामाजिक बन्धनों का प्रभाव नारी को ही झेलना पड़ा हैं, कारण सिर्फ यही हैं कि भारतीय समाज पुरूष प्रधान रहा हैं और इसी की आड़ लेकर हमेंशा से पुरूष बन्धनहींन रहा हैं। सामाजिक बन्धन के लिए कौन कितना जिम्मेंदार हैं? प्रश्न का समाधान स्वयं शिवानी जी ने किया हैं;''हम शोषिता नारी के लिए भले ही संवेदना का अनुभव करें, पर प्रतिष्ठित पुरूष का आज भी कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यही आज भी नारी की सबसे बड़ी समस्या हैं। एक ओर कुटुम्बिनी हैं, दूसरी ओर परस्परावादी सामाजिक शक्तियों ने उसे अभी भी पूर्ण रूप से स्वतन्त्र नहीं होने दिया हैं। समाज अभी भी यही मानकर चलता हैं कि नारी

1- रथ्या- शिवानी - पृ- 32

संरक्षण की वस्तु हैं, किन्तु हम पूरा दोष समाज के मत्थे ही नहीं मढ़ सकते। नारी का उद्धार नारी ही कर सकती हैं। अपनी कुछ समस्याओं के लिए वह स्वयं जिम्मेंदार हैं।''[1]

वास्तव में स्त्र ही स्त्री की सबसे बड़ी शत्रु हैं, एक शिक्षित बहू के चाल चलन से उसके पति, ससूर,देवर किसी को आपत्ति नहीं होंगी, परन्तु सास को जरूर होगी कारण एक स्त्री अगर बन्धनों में अपना जीवन व्यतीत कर चुकी हैं तो वह प्रत्येक स्त्री को बन्धनों में ही स्वीकारेगी चाहे वह स्त्री उसकी बहू ही क्यों न हों।

सामाजिक बन्धनों से आशय यही है कि जिनके रहते हुए स्त्री को अपने भावों की अभिव्यक्ति करनी कठिन हो जाए। स्त्री ऐसी अभिव्यक्तिहीन अवस्था में भी, परिवार के प्रति समर्पण का निर्वहन करती हैं, भले ही यह निर्वहन अनिच्छापूर्ण ही क्यों न हो। इस तरह के निर्वहन का उदाहरण शिवानी के लगभग सभी उपन्यासों में मिलता हैं।

कालिन्दी की नायिका को कोई जरूरी बात करनी थी और वह मर्दो की बैठक में चली गई, पर बात करना तो दूर एक ताना और सुनना पड़ा, ''तुझसे किसने कहा था यहाँ आने को? ये मर्दों की बातें हैं और ये 'छाजा' (बैठक) भी मर्दों की हैं।''[2] पत्नी को तेज हँसने की स्वीकृति भी नहीं यह कैसा बन्धन है? ''नाक पर चमकती लौंग में एक बार उसके कण्ठ की जनेऊ उलझ गई थी और कितनी जोर से हँसने लगे थे, दोनों। उस सरस क्षण में विष घोलने, बन्द दरवाजा थपथपाने आ टपकी अम्मा ने कैसे सब गुड़ गोबर कर दिया था।

यह कोई तरीका है हँसने का ? घर मेंहमानों से भरा है- कोई सुनेगा तो क्या कहेगा कि कैसी बेहया बहू आई है जो आधी रात को ऐसे ठहाके लगा रही हैं।''[3]

1- मणिमाला की हँसी- शिवानी- पृ- 153
2- कालिन्दी -शिवानी- पृ- 146
3- कालिन्दी- शिवानी- पृ- 146

'मायापुरी' की शोभा सतीश को चाहती हैं, लेकिन अपने मनोभावों को व्यक्त नहीं कर पाती हैं। अन्त में सतीश की मृत्यु भी हो जाती हैं, शोभा मृत सतीश को छूकर स्वर्गीय आनन्द की अनुभूति पाति हैं,''झुककर शोभा उस ललाट तक अपना मुख ले गई, ताजे ठण्डे पसीने को उसने बड़े यत्न से आंचल से पौंछ लिया । थोड़ी ही देर में कमरे में भीड़ लग जाएगी....एकान्त के यह अमूल्य क्षण चिरस्थायी नहीं रहेंगे, सोचकर वह सिहर उठी''[1] शोभा जीवित सतीश को कभी जी भरकर देख भी नहीं पाई, उसे लोकलाज का भय जो था, पर आज वह मृत सतीश को छू रहीं हैं....उसमें भी निर्भीकता नहीं हैं। शिवानी के उपन्यासों में कुछ नायिकाएँ साहसी हैं, परन्तु ज्यादातर ऐसी हैं, जो कि अपने विवाह की स्वीकृति भी इसलिए देती हैं कि अपने परिवार को एक जिम्मेंदारी से मुक्त कर दें इस हाँ में उनकी खुशी कहीं भी नहीं हैं। अपने परिवार की खुशी समाज में माँ-बाप की प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए विवाह-सुत्र में बँध जाती हैं और चल पड़ती हैं, एक अन्जानी राह पर। सामाजिक बन्धनों के परिप्रेक्ष्य में नारी समर्पण की अभिव्यक्ति विषय में 'कैंजा' की नायिका नन्दी सर्वाधिक सटीक बैठती हैं। हमारा समाज एक बालक के साथ केवल उसकी माँ को देखकर सन्तुष्ट नहीं होता बल्कि इसका पिता कौन हैं? प्रश्न से जब तक प्रताड़ित करता हैं, जब तक इस प्रश्न का हल नहीं हो जाता। उपन्यास का नायक सुरेश 'सैक्स मैनियाक' हैं। एक विक्षिप्त लड़की भी उसके बिमार व्यक्तित्व का शिकार हो जाती हैं और एक पुत्र को जन्म देकर मर जाती हैं, उस पुत्र को नन्दी तर्वे शहर ले जाकर पाल-पोस कर बड़ा कर देती हैं, लेकिन एक दिन गहरे असमंजस में आ जाती हैं, क्योंकि उसका पुत्र पूछता हैं-मेंरा बाप कौन हैं? अपने पुत्र को नन्दी पिता का नाम देना चाहती हैं, क्योंकि समाज के शब्द प्रहारों से उसे पीछा छुड़ाना था, इसके लिए वह सुरेश से विवाह करने पहाड़ जाती हैं। सामाजिक

1- मायापूरी -शिवानी- पृ- अन्तिम

बन्धनों के समक्ष वह समर्पित हो जाती हैं ''सुरेश चुपचाप उसे ऐसे देख रहा था जैसे चेष्ठा करने पर भी वह उसे पहचान न पा रहा हो। कभी एक शब्द भी न बोलने वाली उसकी भीरू प्रेयसी आज इतनी भुखरा कैसे बन गई थी? जिसे पाने के लिए वह कई वर्षों तक नैराश्य के अन्धकार में भटकता अपना मानसिक सन्तुलन खोकर एक भयानक 'सेक्स मैनियाक' बन उठा था, आज वह स्वयं आकर उसकी बाँहो में सिमट गई थी। पर आज तो उसकी बाँहे पक्षाघात के किसी आकस्मित झटके से अवश होकर निर्जिव लटकी पड़ी थी।''[1]

समाज पिता का नाम जरूर माँगता हैं, इसी कारण डॉ. नन्दी तर्वे ने ऐसे व्यक्ति से विवाह कर लिया जो किसी भी कोने से उसके याग्य नहीं था। डॉ. नन्दी तर्वे एक दिन की सुहागिन रही, क्योंकि जब वह शृंगारिक नववधू झुमके पहनकर प्रणयी के सिरहाने खड़ी हुई तब वह अचेत पड़ा था। अब फिर से यह प्रश्न उठता हैं कि प्रत्येक वन्धन स्त्री के लिए ही क्यों? उत्तर यहीं कहीं हैं कि ''हमारा समाज पुरूष प्रधान हैं, जहाँ पर स्त्री-शिक्षा पर भले ही कितना ही जोर दिया जाये, उसके उत्थान हेतू कितने ही कानून बनाये जाए और भले ही उन्हें लागू करने का कितना ही ढ़ोंग किया जाय, परन्तु क्या वास्तव में स्त्री अपनी इच्छाओं के अनुरूप कुछ कर पायी हैं ? कभी नहीं वह सदियों से परतन्त्र रही हैं और सच्चे मायने में आज भी परतन्त्र ही हैं।''[2]

शिवानी के 'भैरवी' में नायिका चन्दन अघोरियों व तान्त्रिकों के बीच फँस चुकी हैं, जीवन के कई वर्षों तक वह प्रयासरत रही कि कैसे भी अपने पति के पास पहुँच जाय और अन्त में वह अर्द्धनग्नावस्था में अपने पति तक पहुँच तो जाती हैं, उसका पति उसे देखते ही हृदय से लगा लेता हैं, परन्तु अपनाता नहीं हैं। नायिका

1- कैंजा - शिवानी- पृ- 42

2- अभिव्यक्ति - डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा - पृ. 46

चन्दन की स्थिति ऐसी हैं, जैसे कि, ''बेड़ियाँ कटने पर भी तो गाल-कोठरी से छुटा कैदी, मृत्यु-दण्ड को नहीं भुला पाता, स्वयं उसकी ही अन्तरात्मा उसके पैरों में बैड़िया डाल देती हैं। संशय में बँधा, वह चकित दृष्टि से, अपने बन्दी जीवन काल में एकदम बदल गए संसार को देखता; सोचता ही रह जाता हैं। वह अब कहाँ जाएगा....कहाँ?

ठीक वैसे ही, अनजान भड़ भर चौराहे पर खड़ी वह मुक्त बनदिनी भी यही सोच रही थी-वह कहाँ जाए? कहाँ।''[1] 'भैरवी' की चन्दन ही ऐसी स्थिति में नहीं हैं, आज समाज की प्रत्येक औरत सामाजिक बन्धनों के जटिलपाश में बंधी सोच रही हैं कि वह जाए तो कहाँ जाए? मजबूरन वह समर्पण को तैयार हैं, क्यों कि हमारे समाज में नारी कितनी ही शिक्षित एवं सुसंस्कृत हो जाय, परन्तु रूढियों के प्रति आज भी वह उतनी ही संवेदनशील रहती हैं।

4. सामाजिक यथार्थ का चित्रण

वैसे तो भारतीय समाज में निश्चय ही अनेक प्रकार की रीति-रिवाज एवं मर्यादाएँ हैं, लेकिन शिवानी जी पहाड़ी परिवेश से जुड़ी हुई लेखिका हैं तो उन्होंने जिस सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया हैं, वह पूर्णतः उन्ही के परिवेश, वहाँ के रीति-रिवाज और वहीं की सोच से उद्धृत हैं।

मनुष्य का मानस उसी तरह का होगा जिस तरह के समाज में वह रहता हैं या इस तरह कहा जाये किसी भी मनुष्य का मानस उसके समाज के आधार पर बनता हैं। 'स्तालिन' के विचार में 'उत्पादन की प्रणाली जैसी होती हैं, वैसा ही समाज भी होता हैं। समाज के विचार सिद्धान्त राजनीतिक दृष्टिकोण आदि सभी कुछ वैसे ही होते हैं।'[2]

1- भैरवी- शिवानी- पृ- 132

2- आलोचना- नवाँक जुलाई- 1965- पृ- 158

शिवानी के सभी उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण देखने को मिलता हैं। झूठी शानो-शौकत के भावों को व्यक्त करने का चित्रण देखने को मिलता हैं, 'स्वयंसिद्धा' की नायिका की ''बहुत ऊँची नौकरी थी, अर्दल थे, सजा-संवरा बंगला था, कार, फ्रिज, स्टीरियों-सब कुछ उसके करतल पर था, किन्तु नहीं थी शांति। कैसा व्यर्थ जीवन बन गया था उसका। न कहीं उठना, न बैठना, न लड़ना, न झगड़ना।''[1] वैसे चाहती तो माधवी अपने पति के घर वापस जा सकती थी, लेकिन ''स्त्री को यदि एक बार भी केन्द्रिय पद मिल गया तो वह जीते जी उससे कम नहीं स्वीकार कर सकती।''[2] इसीलिए वापस नहीं जा सकी माधवी।

शिवानी ने अपने उपन्यासों में भारतीय नारी के गुणों का सजीव चित्रण किया हैं। 'पुतोंवाली' के शिवसागर अपनी पत्नी को प्यार नहीं देते कारण उसकी पत्नी का बदसूरत होना हैं, लेकिन उसकी पत्नी अपने कर्तव्यों के प्रति पूर्ण सचेत हैं पति का अत्यन्त रूखा व्यवहार भी उसके गुणी स्वभाव को नहीं बदल सका। एक दिन तीव्र ज्वर में तपी हुई पार्वती से शिवसागर खाना मांग बैठते हैं, विवाह के वर्षों बाद इस वार्धक्य में जब पार्वती ने पहली बार अपने पति के मुँह से अपने लिए सम्बोधन सुना तो उसे पति की कठोर गर्जना भी इतनी मधुर लगी जैसे किसी अरण्य में घुंघरूँ बजे हो ''वह चादर फेंककर उठी और चौके में घुस गई, ज्वर से उसकी आँखे ज्वाफूल हो रही थीं। कनपटी पर हथौडियाँ चल रहीं थीं, पैर काँप रहे थे, पर उसने मिनटों में आलू की सब्जी छोंक विशुद्व घृत में पूड़िया उतार लीं।''[3]

भारतीय नारी पूरी उम्र के दुर्व्यवहार को अपने पति की कर्कश पुकार पर ही भूल जाती हैं, क्यों कि कठोरता से ही सही उसे सम्बोधन तो मिला।

इसी तरह 'चौदह फेरे' की नन्दी और 'सुरंगमा' की लक्ष्मी अपने पतियों

1- स्वयंसिद्धा - शिवानी - पृ- 12

2- उत्तरकथा- श्री नरेश मेहता - पृ- 124

3- पूतोंवाली - शिवानी- पृ- 15

से उचित व्यवहार न पाकर भी अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करती हैं।

इस सामाजिक यथार्थ के चित्रण में शिवानी ने भारतीय परम्पराओं का सजीव चित्रण किया हैं।

पहाड़ में केवल सवा रूपया जामाता को थमाकर कुश और हल्दी के बूते पर ही कन्यादान किया जाता हैं। दहेज की परम्परा भी लम्बे समय से चली आ रही हैं, ''पहाड़ में भी अब लेन-देन नई बात नहीं हैं, कोई दिखा के लेता हैं, कोई छिपा के, एक तो पहाड़ में वैसे ही लड़कियों के लिए अच्छे लड़के नहीं जुटते, अच्छी चीज लोगे तो अच्छे दाम भी देने पड़ेंगे।''[1]

समाज में ऐसे अनेक प्रभावशाली व्यक्ति होते हैं, जिनकी समाज में प्रशंसा की जाती हैं, लेकिन उनका निजी जीवन और ही कुछ होता हैं। शिवानी ने ऐसे लोंगो का खुलासा किया हैं।

'कालिन्दी' में कालिन्दी के होने वाले ससुर अपने बारे में स्वयं बताते हैं, मैं दुबई में इस समय सबसे समृद्ध व्यापारी हूँ - स्विमिंग पूल मेंरा हैं, आलिशान महल हैं, मकराना से संगमरमर मंगवा कर फर्श पटवाया हैं मैंने। अपना चार्टर्ड प्लेन हैं, मेंरे इस इकलौते बेटे के बारे में क्या जानती हैं तू।''[2]

इतने सब पर भी वह समृद्ध व्यापारी दहेज में रकम मांगना नहीं छोड़ता। तभी तो कालिन्दी कह देती हैं, बड़ें आश्चर्य की बात हैं कि इतने समृद्ध व्यापारी होने पर भी आपको अपना बैटा बेचना पड़ा वह भी कुल अस्सी हजार में।''[3] समाज में प्रतिष्ठित करोड़पति व्यापारी की वास्तविकता अस्सी हजार में आकर अटक जाती हैं।

इसी तरह 'रथ्या' में बसन्ती को सहारा देने वाला बुजुर्ग सर्कस का मालिक

1- चौदह फेरे- शिवानी- पृ- 9
2- कालिन्दी- शिवानी- पृ- 38
3- वही - शिवानी- पृ- 38

अपनी असलियत पर आ ही जाता हैं, स्वयं बसन्ती के व्यथित शब्दों में ''उसी रात को मुझे 'बेटी-बेटी' कहने वाला वह काला त्रिजुंग-सा मेंरा रक्षक मेंरा भक्षक बन गया। मैं तब सो रही थी, तब वह न जाने किस कुघड़ी में ताला खोल, भीतर चला आया। फिर....फिर तुम्हारे बाबूजी कालाढुंगी के कॉरबट साहब की कहानी सुनाते थे ना? मिहिल के पेड़ पर मचान लगा दुनाली राइफल को साधकर बैठता था वह साहब, ठीक वही हुआ। बड़े वैद कहते थे ना, ''पेड़ से बँधी उस चड़िया की करूण चीख सुनी नहीं जाती थी वसुली। मेंरी चीख सुनने वाला भी कोई नहीं था। उस बीहड़ जंगल में मैं पड़िया सी ही चीखती रही।''[1] 'सुरंगमा' का मंत्री जो कि जनता के लिए पूजनिय हैं, के भी उपन्यास की नायिका के साथ अवैध सम्बन्ध हैं। वह दिन में जनता का सेवक हैं और रात्रि में अपनी प्रेमिका से मिलने ''कभी चादर ओढ़ देहाती बनकर चला आता कभी सायकिल के दायें-बायें दूध की रिक्त बाल्टियाँ खनखनाता दुधवाला?''[2] और जब उसकी प्रेमिका उसकी पत्नी की दुहाई देकर उसे रोकती हैं तब वह धृष्ट कहता हैं,''क्यों उसमें क्या दोष हैं? किसकी मिस्ट्रेस नहीं थी? कभी-कभी राजनीति के गरिष्ट भोजन के बाद ऐसा पाचक भी अनिवार्य हो उठता हैं। रूजवेल्ट, नेपोलियन और कहों तो अपने देश की विभूतियों के नाम भी गिनवा दूँ?''[3] एक मंत्री की वास्तविकता यही हैं, मंच पर दायित्वों को गिनाकर पूरा करने का अभिनय मात्र। 'अतिथि' का कार्तिक जया से विवाह करता हैं, लेकिन विवाह के कुछ दिन बाद ही उसका नकली मुखौटा उतर जाता हैं। एक दिन कार्तिक शराब के नशे में धुत आता हैं और जया से कहता हैं, ''आती क्यों नहीं? लो थामो गजरा और लगाकर दिखाओ.....हम बुला रहे हैं सुना नहीं? आज सुधा होती तो वह खुद भी पीती और हमें भी पिलाती; पर ये तो पिएंगी गंगाजल-ऐं? हनीमून को जाएंगी तिरूपति। तब सुन ले, तेरी जैसी बीसियों पिल्लियों को हमने सूंघ-सूंघ कर

1- रथ्या- शिवानी- पृ- 31-32
2- सुरंगमा- शिवानी- पृ- 169
3- सुरंगमा- शिवानी- पृ- 168

दूर पटक दिया हैं?''[1]

'रति विलाप' के वृद्ध करसन दास कपाड़िया जिनकी पुत्रवधु उन्हें बहुत सम्मान देती हैं और वह सामाजिक दृष्टि में भी पूजनीय हैं। एक दिन उनकी पुत्रवधु अनुसूया का आदर भाव धरा का धरा रह गया, जब अनुसूया ने देखा कि न तो उस वृद्ध ससुर का 'डैंचर' घर में हैं न ही चश्मा। उसका वृद्ध ससुर अपने घर की किशोरी नौकरानी के साथ भाग गया, साथ ही एक पत्र भी लिखकर छोड़ दिया।

''इस वयस में मुझे इस किशोरी का पावन प्रेम मिला, यह मेंरे प्रभु का प्रभूत दान है...। अपना कुछ सामान साथ लेकर जा रहा हूँ, वह भी अपने लिए नहीं, इसके लिए। तेरे शेयर, पासबुक सब तुझे पहले ही सौंप चुका था। तेरा पिता''[2] इसके अतिरिक्त समाज में अनेक प्रकार के झगड़े आपसी मन-मुटाव एवं पारस्परिक ईर्ष्या जैसी बुराईयां भी देखने को मिल जाती हैं। समाज के इस यथार्थ का चित्रण भी शिवानी ने बखूबी किया हैं। 'गैंडा' में दो सखियां राज और सुवर्णा हैं। राज अपने कॉलेज के समय की जलन निकालने के लिए सुवर्णा के पति को अपने प्रेमपाश में फाँस लेती हैं और सुवर्णा अपनी प्रिय सखी को रास्ते से हटाने के लिए हर सम्भव प्रयास करती हैं और अन्त में उसे मौत के घाट उतरवा देती हैं।

शिवानी जी पहाड़ की संस्कृति से जुड़ी हुई है उनके उपन्यासों में वहाँ की जीवन शैली, रीति-रिवाज, खान-पान इत्यादि का सजीव चित्रण हुआ है, जो कि सामाजिक यथार्थ के अन्तर्गत आता हैं।

विवाह एक सामाजिक धारणा हैं, लेकिन प्रतिमान बदले हैं। 'सुरंगमा' में लक्ष्मी ने गजानन से गन्धर्व विवाह किया था, पर उसका चयन गलत निकला और उसे गर्भावस्था में ही पलायन करना पड़ा। उसे शरण मिली एक ईसाई के घर में,

---

1-अतिथि - शिवानी- पृ- 134

2- रतिविलाप- शिवानी- पृ- 29-30

जहाँ रौबर्ट और वैरोनिका (भाई-बहन) रहते थे। वैरोनिका की चिकित्सक आँखों ने प्रथम दृष्टि में ही उसके गर्भ का पता लगा लिया। आगे उन दोनों के वार्तालाप से स्थिति स्पष्ट हैं,''तुम्हारी अवैध सन्तान का भविष्य अब भी सम्भाला जा सकता हैं, लक्ष्मी, मैं जानती हूँ यह एक अत्यन्त अभद्र हृदयहीन प्रस्ताव हैं, पर तुम रौबर्ट से विवाह कर लो, लक्ष्मी।

''यह क्या कह रही हैं आप? मैंने दो दिन से पहले उनको कभी देखा नहीं था।''

यह तो कोई ऐसी बात नहीं हैं, तुम हिन्दुओं में तो तुम लोग हमेंशा ही अनदेखे-अनजाने व्यक्ति की चादर की गाँठ से बँध, खुशी-खुशी फेरे लेती हो।''[1]

शिवानी जी के उपन्यासों का यही सत्य हैं कि नायिकाओं ने स्थिति के अनुरूप स्वयं को बदला हैं या कहें कि स्थिति के अनुरूप खुद को ढाल लिया हैं तभी तो ''दुसरे दिन, फिर कुछ स्वप्न-सा ही घटीत हो गया था। जिस प्राचीन गिरजे में लक्ष्मी जन्मजात धर्म का परित्याग कर, एक सर्वथा अनजान व्यक्ति के पार्श्व में जाकर खड़ी हो गई था, फादर ओनूर ने केवल एक बार उससे पूछा था, ''तुम्हें इस व्यक्ति की पत्नी बनना स्वीकार हैं? स्वीकार हैं, नतमुखी लक्ष्मी का धड़कता हृदय उत्तर के साथ-साथ बाहर छिटका जा रहा था। उसका आर्द्र स्वर होने पर भी, चेहरा करूण रूदन की यंत्रणा से भी अधिक कातर लग रहा था। विवाह के शब्द समूह उच्चारित करने में उसके प्रत्येक स्वर में विवश यन्त्रणा की झंकार थी।''[1]

5. नारी की सामाजिक स्थिति की प्रस्तुति और आधुनिक समाज को चेतावनी

हिन्दी उपन्यासों के संसार में शिवानी जी के उपन्यास अप्रतिम नायिकाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। इनकी नायिकाएँ एक ओर विलक्षण हैं तो दूसरी ओर शोषित भी हैं, शोषण सामाजिक स्थितियों से उपजा हैं। ''हमारी सामाजिक संरचना अपने

1- सुरंगमा - शिवानी- पृ- 36

भीतर जिन सामाजिक विकृतियों को संजोए बैठी हैं कहीं न कहीं उसका सिरा स्त्र की नियति से जुड़ जाता हैं। लेखिका ने विस्तार और गहराई के आयामों में उतरकर अपनी रचनाओं में नारी चरित्रों की बड़ी सजीवता से प्रस्तुति की हैं। यह सच हैं कि शिवानी बुनियादी रूप से उस सामाजिक आर्थिक ताने-बाने को नारी के उत्पीड़न और शोषण के लिए उत्तरदायी मानती हैं, जो कि मध्ययुग से चली आ रही हमारी विषमताओं का प्रमुख कारण हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि नारी का इस सामाजिक अधोगति तक पहुँचने में पुरूष वर्ग का बड़ा हाथ हैं। शिवानी के उपन्यासों में अनेक स्तरों पर यह व्यंजना देखी जा सकती हैं।''[2]

नारी की सामाजिक स्थिति अच्छी न होने के पीछे पुरूष का हाथ तो हैं ही, लेकिन नारी का बहुत ज्यादा हैं। उदाहरण के तौर पर शिवानी के उपन्यासों में ऐसे दृश्य भरे पड़े हैं, जहाँ सौतेली माँ अपनी अबोध पुत्री को सुबह से शाम तक शोषण की चक्की में पीसती हैं या एक नारी राह भूली हुई ग्रामीण लड़की को वेश्यावृत्ति की ओर धकेल देती हैं या फिर एक सखी अपनी प्रिय सखी के पति को प्रेमजाल में फँसा लेती हैं।

इन आँकड़ों का संकलन कर अगर हम विश्लेषण करें तो यही पाते हैं कि नारी की ऐसी सामाजिक स्थिति की जिम्मेंदार एक नारी ही है। पहले नारी पर पूर्ण पाबन्दी थी, लेकिन ''स्वतन्त्रता प्राप्ति के चालीस वर्ष पश्चात् भी नारी की मूलभूत समस्या बहुत अंश में वैसी ही बनी रह गई। यही नहीं, भारतीय नारी की सामाजिक स्थिति ने ऐसा विचित्र मोड़ लिया है कि उस पर न तो पूर्ण पाबन्दी रह गई है, न उसे पूर्ण छूट ही हैं। इतना अवश्य है कि उसे बकरी की भाँति जो पहले बित्तेभर की रस्सी से बँधी एक सीमित हरियाली के टुकड़े पर ही मुँह मार सकती थी; पर

1- सुरंगमा - शिवानी- पृ- 37

2- शिवानी के उपन्यास - संवेदना और शितप - डॉ. मकरकन्द भट्ट

रस्सी अब जरा लम्बी कर दी जाने से यह सीमित परिधि को लाँघ सकती है, किन्तु रज्जु बंधन तो है ही । क्या इसे हम स्वतन्त्र या स्वाभाविक जीवन कह सकते हैं?''[1]

'कालिन्दी' में पन्द्रह वर्षीय अन्नपूर्णा ससुराल से आ गई और ससुराल जाने से मना भी कर दिया, सभी उसे समझाने लगे कि ससुराल में ही असली सुख है, लेकिन कोनसा सुख? उस बित्ते भर की संकोची लड़की अन्नपूर्णा ने, जिसकी नग्न कुहनी भी शायद कभी किसी ने नहीं देखी थी, अपनी कुर्ती, ऊपर उलट दी, जिस पर दागे गये लम्बे-लम्बे निशान थे। ''सबने मिलकर बारी-बारी से मुझे जली लकड़ी से मारा जानते हो क्यों? क्यों कि मुझे चार सिलाइयों के मौजे बिनने नहीं आये और मैंने एड़ी की छाट गलत कर दी।''[2]

बात अन्नपूर्णा पर ही खतम नहीं हो जाती, आगे चलकर उसकी पुत्री भी कुछ ऐसा ही भोगती है। अन्नपूर्णा की पुत्री 'कालिन्दी' पेशे से डॉक्टर है, वह विवाह मण्डप में बैठी है और अपने घर वालों को दहेज के लिए अपमानित होता देख कर, खड़ी हो जाती है, आगे उसने जो किया वह समाज के लिए एक चेतावनी ही है। कालिन्दी के ही शब्दों में, ''आपका बेटा हमें नहीं खरीदना है, जाइये इसी क्षण अपनी बारात लौटा ले जाइये-और जहाँ अपने पुत्र का मुँहमांगा दाम मिले वहीं बेच आइये।''[3]

उसके ऐसे साहस से समाज को एक नई दिशा मिली।

इसी उपन्यास में आगे एक ऐसा उदाहरण भी है जो कि नारी की असीम विवशता को दर्शाता है। सरोज के पिता उन भाग्यशालियों में से थे जिन्हे दामाद ढूँढ़ना नहीं पड़ता, स्वयं दामाद ही उन्हे ढूँढ़ लेता है। एक ऊँचे घराने का लड़का आकर उनकी सुपुत्री सरोज को ब्याह ले गया,''विवाह के दूसरे ही दिन वर-वधू के

1- मणिमाला की हँसी - शिवानी - पृ 151

2- कालिन्दी - शिवानी - पृ 15

3- वही - शिवानी प. 38

फुर्र से विदेश उड़ जाने की बात उनसे कही गई थी, पर जब उड़ने का समय हुआ तो चिड्डा ही अकेले फुर्र उड़ गया, चिड़िया चोंच फैलाए देखती रही। वीसा की जटिलता से नई नवेली को परिचित करा, वह यह कह कर उसके आँसू पोंछ गया कि वीसा बनते ही वह उसे बुला भेजेगा। पर नियति तो मुँह में आँचल ठूँसे हँस रही थी। पुत्र को एयरपोर्ट पहुँचा कर पिता लौटे तो छाती पर हाथ धरे, देहरी पर ही 'हाय-राम' कर ढेर हो गए। डॉक्टरों ने कहा, जबरदस्त दिल के दौरे ने ही उनके प्राण ले लिए हैं।

HANSA MEHTA LIBRARY M. S. University of Baroda

सरोज की सास ने फिर मृत पति की निष्प्राण देह पर पछाड़े खा-खा कर, बार-बार एक ही कसम खाई थी, वह इस अलक्षिणी बहू का मूँह नहीं देखेगी-अभी तो उसने घर में पैर रखते ही ससुर को लील लिया था, कहीं उसके इकलौते बेटे को भी न निगल ले। तत्काल ही उसे नाइट बस से ही पिता के साथ खोटे सिक्के-सा लौटा दिया था।''[1]

मृत्यु एक कड़वा सच है, लेकिन किसी की स्वाभाविक मौत का जिम्मेंदार भी कई बार भारतीय नारी को ठहराया जाता है।

'चल खुसरो घर आपने' की नायिका कुमुद है वह परिस्थितिवश एक राजा की उन्मादिनी पत्नी का परिचर्या करके जीवन यापन करती है, पर क्या वह वहाँ रह पाई? नहीं, उस राजा साहब के पारिवारिक सदस्यों ने कटाक्ष कर-कर के पलायन करने पर मजबूर कर दिया। ताई कहती,''क्यों री मंझली; छुटके राजा की पसन्द आला है ना? एक से एक छँटकर न जाने कहाँ से ले आते है।''[2] तो ताई कहती,'' क्यों री छुटकी, यह सौत अच्छी है, या पहले की अच्छी थी?''[3]

'चौदह फेरे' की नन्दी को उसके कर्नल पति ने इसलिए छोड़ दिया था कि

1- कालिन्दी - शिवानी - पृ. 122-123
2- चल खुसरो घर आपने - शिवानी पृ. 51
3- वही - शिवानी

वह उसके उच्च तबके में उठने बैठने के लायक नहीं थी; लेकिन कुछ समय बाद नन्दी अपनी पुत्री सहित अपने घर लौट आई; यह निर्णय उनका ही था वह क्यों छोड़ अपना घर। उसने कोई गुनाह नहीं किया है। उसने अपने पति का सामना करते ही स्वयं को कायर महसूस किया ''कितना कुछ कहना चाहती थी, नन्दी, अपनी शिकायतों को दो के पहाड़े की तरह रटकर कई रातें काट दी थीं, पर आज पति का सामना करते ही उसका समस्त साहस दुम दबाकर भाग गया।''[1] कुछ ही समय नन्दी अपने घर के कलुषित वातावरण में रह पाई फिर उसने घर छोड़कर आध्यात्म की शरण ले ली। ध्यामग्ना नन्दी एक चेतावनी देती हुई प्रतीत होती है जिसमें वह अरबपति व्यक्ति का सुखसुविधाओं से परिपूर्ण जीवन त्याग देती है और एक वस्त्रधारिणी, सर्वसुखत्यागिनी बन कर जीवन यापन करती है। वह आत्मसम्मान की दृष्टि से गरीब थी यहाँ वह गरीब-अमीर के पैमाने से पृथक् हैं?

नन्दी अकेली ही ऐसी औरत नहीं है, बल्की प्रत्येक औरत, वह चाहे कितनी भी विलक्षण क्यों न हो पुरूष के अधीन ही है। 'कस्तुरी मृग' में भी नायक को अपनी माँ की धुँधली छाया ही स्मरण है, ''जीवन की पहली स्मृति मुझे माँ के पीले चेहरे और सूजी निमग्न आँखों की ही है। कभी, वह मुझे छाती से चिपटाए सिसक रही है और कभी रात-आधी रात को खिड़की खोल अपने उस अलमस्त सहचर की व्यर्थ प्रतीक्षा में खड़ी न जाने क्या बुदबुदा रही हैं। मैं डरकर चादर मुँह तक खींच लेता था, कहीं अम्मा पागल तो नहीं हो रही है?''[2] अम्मा पगलाई थीं अभावों से और अभाव कोई धन-दौलत का नहीं था, अभाव था पति साहचर्य का। उसका पति तेज तर्रार तामसिक प्रवृत्ति का शौकीन व्यक्ति था और वह खुद सात्विक प्रवृत्ति की शांत महिला थी, बस यही उसका भाग्य उससे रूठ गया, उसका पति उसे एक

1- चौदह फेरे - शिवानी - पृ.15

2- कस्तुरी मृग - शिवानी - पृ.10

'ठण्डी स्त्री कहकर-वेश्यालयों की तरफ मुड़ गया, फिर वहाँ से कभी नहीं लौटा।

'सुरंगमा' की लक्ष्मी अपने पति के शोषण से परेशान होकर घर से भागकर एक सज्जन पुरूष की शरण में रहती है, वहीं वह अपनी पुत्री को जन्म देकर पालती पोसती है। छः वर्षों बाद उसका दुराचारी पति उसे खोजता हुआ आ जाता है और वर्षों की दबी हवस को लक्ष्मी पर निकाल देता है। अपनी माँ का दैहिक शोषण उसकी पुत्री देख लेती है और आज अठारह वर्ष पूर्व की उस भयानक स्मृति को सुरंगमा चाहने पर भी नहीं भुला सकी है। जननी की नग्न देह, फटी-नुची साड़ी, चेहरे पर फैले माँ के लम्बे बाल और पलंग के पास बैठी, बिलखती आण्टी, 'लक्ष्मी, बोलो लक्ष्मी तुम ठीक हो ना।'

भारतीय जीवन को जीने वाले अधिकतर चरित्र शोषित ही हैं, उनमें भी नारियाँ प्रमुख है। 'पूतों वाली' की पार्वती अपने बदसूरत होने का खामियाजा उम्र भर भुगतती है। उसके पति शिवसागर उसे पाँच पुत्रों की माता तो बना देते हैं, पर पार्वती का चेहरा कभी नहीं देखते न ही उससे कभी कोई बातचीत करते हैं। एक दिन पार्वती बेहोश होकर गिर जाती है, तब शिवसागर उसे मृत मान बैठते हैं और सोचने लगते हैं,'' कहों दिल का दौरा तो नहीं पड़ गया, उसे, इस उम्र में वह भी उन्हें छोड़ गई तो उनका क्या होगा जिसे जीवन-भर वे खाज की कुतिया की भाँति प्रताड़ित करते रहे, उसकी इस अनहोनी मृत्यु की सम्भावना से वे एक क्षण को स्वयं अपनी चेतना खो बैठे, यद्यपि उस सम्भावित वियोग के बीच भी स्वयं उनकी स्वार्थपरता ही प्रखर हो रही थी। उसे कुछ हो गया तो दो जून की रोटी भी नसीब नहीं होगी।''[1] जहाँ स्त्री भीतिमुक्त नहीं हो पाती, वहाँ रजामन्दी का प्रश्न ही कहाँ उठता है? जब तक पुरूष उसे उपभोग्य या उपभोग की वस्तु मानता है, तब तक वह उसे समानता का दर्जा दे ही कैसे सकता है? स्पष्ट है कि जब तक यह

1- पूतोंवाली - शिवानी - पृ. 21-22

असमानता की भावना रहेगी, पुरूष उसका किसी न किसी रूप से शोषण करेगा, एवं उसकी विवशता का अनुचित लाभ उठायेगा।

आज की नारी इस पुरूष प्रधान समाज में नारी के हाथों ही क्यों परास्त हो रही है पीड़ित हो रही है? भारतीय समाज में नारी की नियति इतनी दोहरी भार क्यों सह रही है? नारी आन्दोलन की बाढ़ में उत्साह का अतिरेक प्रदर्शित करने वाली आधुनिकाओं का क्या इस पहलू पर रूक कर आत्मविश्लेषण नहीं करना चाहिए? शिवानी का इस बिन्दु पर बहुत ही विचारोत्तेजक दृष्टिकोण है। वे ऊपरी समाधानों की बजाए समस्या की जड़ में प्रवेश लेने की प्रेरणा देती है।

शिवानी जी ने अपने उपन्यासों में नारी चित्रण को कुछ विशेष रूपों में उभारा है कभी उन्होंने उसे प्रेमिका बताया है तो दूसरे ही पल वात्सल्य से परिपूर्ण माँ का चित्रण भी किया है उनके उपन्यासों में से कुछ विशेष पात्रों का चित्रण किया है जो कि पढ़ने वाले की मानसिक चेतना को झकझोर कर रख देता है। मानस की अन्तस की गहराइयों तक वह पात्र समाता चला जाता है। उन्हीं कुछ विशेष पात्रों का वर्णन किया गया है।

विशेष रूपों में नारी चित्रण

मायापुरी –(1957)

शिवानी जी के प्रथम उपन्यास मायापुरी में एक पहाड़ी कन्या शोभा के संघर्षपूर्ण जीवन की कथा चित्रित है। एक युवक सतीश उससे प्रेम तो करता है, लेकिन विवाह इसलिए नहीं कर पाता क्योंकि पहले से उसका सम्बन्ध राजपूत तिवारी जी की कन्या सविता से पक्का हो गया था। उसमें (सतीश) माता पिता का विरोध कर शोभा से विवाह करने का साहस नहीं था। कुछ दिनों बाद शोभा को एक रानी की सेक्रेटरी का पद मिल जाता है और उसके कष्टो का अंत हो जाता है। वहीं उसे पता चलता है कि स्थूलांगी दुश्चरित्रा पत्नी के साथ सतीश प्रसन्न नहीं है। एक दिन दुर्घटनावश

सतीश के दोनों पैर कुचले और उसकी मृत्यु हो गई।

मायापुरी की शोभा (प्रेमिका)–

शोभा- जिसकी पारिवारिक परिस्थितियाँ उसे शहर में अपनी माँ की सखी के यहाँ पढ़ाई हेतु भेज देती है, शोभा अपनी मौसी के घर को सम्भालते हुए पढ़ाई कर रही थी कि मौसी का पुत्र उसे चाह बैठता है। शोभा लक्ष्यहीन सी भागती रहती है; उसके हाथ कुछ भी नहीं लग पाता, लेकिन फिर भी जो सबसे बड़ी निधि शोभा को मिलती है वह है सतीश की मृत्यु के समय उसका सामीप्य। प्रेम को महत्व देने वाली स्वाभिमानी शोभा अपने प्रेम को न पा सकी, पर जितना पाया उसमें सन्तुष्ट थी।

चौदह फेरे (1960) –

शिवानी जी का दूसरा बड़ा उपन्यास 'चौदह फेरे' है। यह उपन्यास 1960 में प्रकाशित हुआ। 'चौदह फेरे' में प्रेम का त्रिकोणात्मक चित्रण है। उपन्यास का नायक कर्नल शिवदत्त उद्योगपति है। उसकी पत्नी नन्दी उसकी उपेक्षा की शिकार है। परेशान होकर वह सन्यास ले लेती है। नायक किसी और स्त्री से प्रेम करता है जिसका नाम मल्लिका है। मल्लिका भी कुछ वर्षों पश्चात् उसे छोड़कर काशी चली जाती है। नायक की उसकी पहली पत्नी से एक पुत्री भी है 'अहल्या'। कर्नल ने उसके विवाह के लिए एक युवक चुना है वह उस युवक से विवाह नहीं करती जिसे कर्नल सहन नहीं कर पाता। अहल्या 'राजू' नाम के युवक में वे सभी खूबियाँ देख लेती है जो कि एक पुरूष में होनी चाहिए। 'राजू' अहल्या के मन के भाव को नहीं पढ़ पाता। ओर अहल्या पहाड़ से वापस आकर लड़कियों के हॉस्टल में नौकरी कर लेती हैं। बहुत समय व्यतीत होने पर उसे पता चला राजू फौज की जिस टुकड़ी के साथ मोर्चे पर था उस टुकड़ी का एक भी जवान नहीं बचा। राजू की लाश तक नहीं मिलती पर उसे मृत घोषित कर दिया जाता है। अहल्या को बहुत बाद में राजू के जीवित होने का पता चलता है।

'चौदह फेरे' के माध्यम से शिवानी जी ने ग्रामीण महिला नन्दी की मनःस्थिति का चित्रण किया है।

नन्दी (पत्नी) –

शांत, सौम्य, आध्यात्मिक, ग्रामीण परिवेश की नन्दी अपने शहरी कर्नल पति के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पाती या यों कहा जाये कर्नल की शान में नन्दी पैबन्द मात्र रह जाती है।

कर्नल शिवदत्त की परिवेश जन्य आकाँक्षाऐं नन्दी में नहीं मिलने पर कर्नल नन्दी से विमुख हो जाता है। फिर कर्नल किसी और औरत की तरफ आकृष्ट हो जाता है। नन्दी यह सब सहन नहीं कर पाती है और सन्यास ले लेती है।

अहल्या (बेटी)

अहल्या को बचपन से ही अपने बाप का प्यार नसीब नहीं हुआ जब उसकी खेलने खाने की अवस्था हुई वह एक-एक चीज के लिए तरस जाती। अहल्या ने अपनी माँ को हमेंशा काम करते और रोते हुए ही देखा था। एक दिन उसकी माँ उसे लेकर उसके पिता के घर 'नन्दी' में पहुँच जाती है वहाँ अहल्या को वो सब कुछ मिलता है जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी। लेकिन भौतिक सुख सुविधाओं को प्राप्त करना ही सच्चा सुख नहीं होता है यह उसे बाद में अहसास होता है। क्यों इन सब चिजों को पाने के बाद वह माँ के प्यार से भी वंचित हो गई। उसे बोर्डिंग में पढ़ने के लिए भेज दिया जाता है। जहाँ वह धीरे-धारे अपनी माँ को भूल जाती है। एक बार वह अपने पिता के साथ अपने रिश्तेदार की शादी में जाती है वही उसे पता चलता है कि उसकी माँ ने संन्यास लेकर एक आश्रम में पनाह ले रखी है तो वह अपनी माँ को देखने के लिए व्याकुल हो उठती है। वह आश्रम में अपनी ध्यनमग्ना माँ को देखकर 'अम्मा' कह कर माँ की गोद में लौटने को व्याकुल हो उठी। जिसने जन्म दिया था उस जननी के साक्षात्कार ने उसे पलभर में ही फिर बचपन की

'अहली' बना दिया।

अहल्या (पढ़ी लिखी नौकरी पेशा युवती) –

अहल्या के पिता के पास आ जाने के बाद हर तरह का ऐशोआराम सुलभ हो गया था और वह अपने आपको उसी माहौल के अनुसार ढ़ालने लगी थी। कलकत्ता आकर अहल्या अपना मन लगाने के लिए अपने पिता की मर्जी के खिलाफ नौकरी कर लेती है। वहाँ उसे बहुत से अनुभव होते है जिनमें सबसे कडूवा अनुभव था मल्लिका मौसी वाला। एक दिन वह अपनी _स्कूल की लड़कियों को लेकर ट्रेन से रवाना होती हैं तो बीच रास्ते में एक लड़की सहायता माँग कर डिब्बे में चढ़ जाती है। फिर वह लड़की उसे बातो में उलझाकर घर ले जाती है। वहाँ जाकर उसे पता चलता है कि वह गलत जगह आ गई है। जब वह भागने लगती है तो मल्लिका वहाँ आ जाती है जो उन सबकी संचालक होती है उसे देखकर अहल्या स्तब्ध रह जाती है। और वहाँ से भाग खड़ी होती है। जब वह पिता के घर आती है तो उसे पता चलता है कि उसकी शादी उससे बगैर पूछे ही पक्की कर दी गई है। उसे बहुत दुख होता है कि एक पढ़ी-लिखी लड़की से पिता ने पूछना भी जरूरी नहीं समझा। और वह इस रिश्ते के खिलाफ हो जाती है। और शादी के तीन दिन पहले घर से भाग कर अपने प्रेमी के साथ शादी कर लेती है।

मल्लिका (असत् नारी पात्र)–

सत् नारी पात्रों के अलावा असत् नारी पात्रों का चित्रण भी शिवानी जी के उपन्यासों में हुआ है। ये नारियाँ अपने आप में उलझी सी, वक्र स्वभाव वाली, अन्तर्द्वन्द्व के चक्र में फँसी, परगमन व एकाधिक पुरूषों के साथ सम्बन्ध रखने वाली भी होती है। ऐसी ही पात्र है मल्लिका जो कर्नल को अपने इशारो पर नचाती है। मल्लिका कर्नल के जीवन की चाबी थी।

मल्लिका राखाल सरकार की पत्नी है जो कि कर्नल का प्राइवेट सेक्रेटरी है। कर्नल

की पत्नी नन्दी मल्लिका से बहुत सुन्दर थी "पर पुरूष को क्या केवल नारी का सौन्दर्य ही बाँधता है? कभी सुन्दरी पत्नी पति को वश में नहीं कर पाती और कभी काली-कलूटी चुड़ैल-सी बदशकल स्त्री भी सुन्दर पुरूष को अपने काले चरणो का दास बनाकर छोड़ देती है।"[1] मल्लिका के आचरण में कही भी संयम नहीं था। उसके पति एक ऐक्सीडेंन्ट में बुरी तरह आहत होकर दिमाग और जबान दोनों ही खो बैठे थे। पंगु पति को इनवैलिड चेअर और एग्लोइंडियन नर्स को सौंपकर मल्लिका ने पति का आफिसी पद ग्रहण कर लिया। समाज की दृष्टि में वह निर्लज्ज; दुराचारिणी थी। पति के मर जाने के बाद पूरे कलकत्ता में उसकी थुड़ी-थुड़ी हो गई दूसरे दिन सुबह वह गायब हो गई। इतने पाप कर चुकने के बाद भी वह नया धँधा चालू कर देती है लड़कीयों को किराये से अपने घर में रहने देती है उनके जरिये जो कमाई होती है उससे अपना जीवन निर्वाह करती है। एक दिन वह अहल्या को बताती है कि उसे उसके पापों की यथेष्ट सजा मिल चुकी है। दिल्ली में ही उसे हिराजरोग ने पकड़ लिया था। बाद में पता चला कि इस रोग का कोई इलाज नहीं है मल्लिका ने अपना घर तो बर्बाद किया ही नन्दी का घर भी नहीं बसने दिया। मल्लिका जैसी औरतो का अन्त में कोई सहारा नहीं रहता है।

कृष्णकली (1962) –

कृष्णकली उपन्यास की नायिका कृष्णकली है। कोढ़ी माँ बाप की पुत्री कृष्णकली जब जन्म लेती है तो उसकी माँ ठूँठ से हाथ में बची इक्की दुक्की अंगुलियों से उसका गला दबाकर मारने का प्रयास करती है तो डॉ. पैट्रिक सही मौके पर पहुँचकर उस बच्ची को छीन लेती है उसकी माँ के लिए बच्ची मृत घोषित हो जाती है। डॉ. पैट्रिक उस बच्ची को एक वेश्या पन्ना की गोद में डाल देती है। पन्ना उस बच्ची को अच्छी तरह पालपोस कर बड़ा तो कर देती है परन्तु कृष्णकली को जैसे ही पता चलता

1- चौदह फेरे - शिवानी - पृ.27

है कि पन्ना उसकी माँ नहीं है; तब वह घर छोड़कर चली जाती है और मॉडलिंग को अपनाती है। कुछ समय पश्चात् वह मॉडलिंग छोड़कर एक होटल रिसेप्सनिस्ट बन जाती है। जिन्दगी के प्रत्येक मोड़ पर वो टूटती अवश्य है, पर उसने हारना और झुकना नहीं सीखा। वो पहाड़ी शेरनी की तरह अकेली जीती है, हद से ज्यादा मोहक, सुन्दरता की धनी कृष्णकली अपने स्तीत्व को बचाये रखती है। फिर उसे प्रवीर से प्रेम हो जाता है किन्तु प्रवीर जाति पांति संस्कारों में जकड़ा पुरूष है वह समाज को ठुकराकर उसे स्वीकार नहीं कर पाता। कृष्णकली रोग से पिड़ित हो जाती है। डॉ. कहता है कि काल उसे कभी भी झपट सकता है। कृष्णकली प्रवीर को खत भेजकर बुलवाती है। प्रवीर से कृष्णकली बेहद चुलबुली बातें करती है। जीवन के अंतिम पड़ाव में भी वो हास परिहास नहीं भूली थी। प्रवीर के जाने से पहले ही कृष्णकली नींद की गोलियाँ खाकर मर जाती है।

कृष्णकली (बेटी) –

कृष्णकली के जन्म का इतिहास भी उतना ही रहस्य भरा था जितना कि स्वयं उसका व्यक्तित्व। कली ने जन्म तो कुष्ठ रोग से पिड़ित माँ की कोख से लिया जिसने उसे जन्म लेते ही मारने की कोशिश की और पिता था खान जो उसकी माँ को गर्भवती छोड़कर कही चला गया था। कली को फिर से जीवन दान दिया एक स्नेहिल महिला डॉ. पैट्रिक ने वो उसे पन्ना नाम की एक वेश्या के पास पालने के लिए दे देती है। पन्ना उसे बोर्डिंग में भेज देती है। कली धीरे-धीरे सब समझने लगती है वह पन्ना से बार-बार अपने पिता का नाम पूछती है आखिर कौन है उसके पिता वह अपनी माँ से कहती है-''कृष्णकली मजुमदार नाम तो तुमने इतना सुन्दर रख दिया माँ पर यह मजुमदार बनाने वाला आखिर है कौन?''[1] 'पन्ना दिन पर दिन बिगड़ती जा रही पुत्री को देखकर बहुत दुखी होती है। वह जिस अनाथ बालिका

1- कृष्णकली - शिवानी - पृ. 52

को अपने जीवन का सम्बल मान रही थी उसकी मृगतृष्णा उसे अब और नहीं छल सकती थी।'

कृष्णकली (अपराधी वृत्ती की युवती) -

कली एक ऐसे माता-पिता की सन्तान थी जो स्वयं अपराधी प्रवृत्ति के थे। बाद में पन्ना नामक वेश्या उसकी परवरिश करती है, पाँच वर्ष तक कली गाती-नाचती वेश्याओं को देखती रहती है, फिर उसे वातावरण से दूर तो कर दिया जाता है, पर वो मुजरे भरा वातावरण उसके स्मृति पटल पर चिपककर रह जाता है। इसीलिए बाद में अच्छे माहौल में रहने पर भी उसमें अपने माता-पिता की सारी प्रवृत्तियाँ अपने आप आने लगती है। कृष्णकली उदण्ड वाचाल, बदमिजाज, बद्तमीज, बेशरम बन जाती है। लेकिन अपने ऐसे स्वभाव के लिए कली कही भी दोषी नहीं है। जिसे पैदा होते ही सगी माँ मार डालने का प्रयास करें, फिर उसे एक वेश्या की शरण मिले, जिसकी सुविधाएँ तो कली महसूस करती रही पर ममत्व नहीं। इसके बाद रंगबिरंगी दुनिया में उसे स्वार्थपरता नजर आयी। एक दिन रेवरेण्ड मदर रोजी को पत्र लिखकर कली के बारे में बताती है, लड़की को बनने सँवरने में जितनी रुचि है। उसकी आधी भी यदि पढ़ने में होती, तो यह हमारे कान्वेन्ट का नाम उज्ज्वल करती। पर इस नन्हे प्रखर मस्तिष्क की कुटिल चाल देखकर सहसा विश्वास ही नहीं कर पाती।''

मदर रोजी को बताती है कि यह अपने घर ही नहीं जाना चाहती अपने जन्म की अनजान पिता की इस उलझी गुत्थी को सुलझाना चाहती है, पर सुलझा नहीं पाती, और वही तनाव इसे अस्वाभाविक रूप से क्रूर, हृदयहीन, विद्रोहिणी बना रहा है।''[1] धीरे-धीरे वह चोरी भी करने लगती है। कली कलकत्ता में आकर बड़ी स्वाभाविकता के साथ स्मगलिंग का काम करने लगती है। धीरे-धीरे कली ने अपने पैर स्वयं ही

1- कृष्णकली - शिवानी पृ.51

महानगरी में जमा लिये अब उसे किसी के कन्धे का सहारा लेने की आवश्यकता नहीं थी। इस प्रकार कली एक लम्बे अरसे तक धधकती भट्टी में हाथ डालकर खेलती रही थी।

कृष्णकली (भावुक संवेदनशील प्रेमिका) –

कली जिस मकान में किराये से रहती थी उसी मकान मालिक का ज्येष्ठ पुत्र था प्रवीर। अपूर्ण कृष्णकली प्रवीर में पूर्णता देख उससे प्रेम कर बैठती है। लेकिन प्रवीर उसे पलट कर भी नहीं देखता एक दिन कली के घर जाने पर प्रवीर की माँ पेड़ा खिलाती है और बताती है कि हमारे लल्ला ने शादी के लिए हाँ कर दी है। कली के कण्ठ का पेड़ा कण्ठ में ही अटक जाता है''नादान शुन्य में फैली बाहें एक बार फिर किसी अनाड़ी तैराक की भाँति अलग जलराशि में किसी तिनके का अदृश्य सहारा टटोलने लगी।''[1]

कृष्णकली की भावनाओं से अनजान प्रवीर कहीं अन्यत्र विवाह कर लेता है। एक दिन कली प्रवीर को सब कुछ बता देती है। कली कहती है कि जिस दिन तुम्हें पहली बार देखा उसी दिन मुझे लगा था कि यही मेंरा सिद्धी-सोपान है। प्रवीर को कली बताती है कि जिस दिन तुम्हारी सगाई हुई उसी दिन मैंने भी अपनी सगाई का उत्सव मनाया जिस दिन तुम्हारी बरात आयेगी उस दिन फिर दुल्हन बनुँगी। तुम्हारे चदरे में एक और गाँठ लग जाये तो चौंकना मत। प्रवीर को कली पा तो नहीं सकी, पर थोड़े दिन बाद आने वाली मृत्यु को प्रवीर के सामने ही खींचकर ले आती है; और मुक्त हो जाती है।

भैरवी (1969) –

चंदन एक खूबसूत लड़की है और उसी के दुःख की कहानी है 'भैरवी'। राज राजेश्वरी चंदन की माँ है, यौवन की गम्भीर भूलों से उसका जीवन रेगिस्तान बन

1- कृष्णकली - शिवानी पृ. 143

चुका है। अपनी पुत्री चंदन को वह इन भूलों से बचाकर रखती है। संयोग से पर्वतारोहण के लिए आये उसी की जाति के युवक (विक्रम) से चंदन का विवाह हो जाता है। उनका सुखी वैवाहिक जीवन बर्बाद हो जाता है जब चलती ट्रेन में विक्रम को बाँधकर उसी के सामने कुछ असामाजिक तत्व चंदन पर बलात्कार करते हैं। ग्लानिवश चंदन चलती गाड़ी से कूद जाती है, पर वो मरती नहीं है, एक तात्रिक और उसकी शिष्य मंडली की देखरेख उसे स्वस्थ बना देती है। चंदन का गेरूआ वस्तों के पीछे छिपा सौंदर्य गुरूदेव (तांत्रिक) को डगमगा देता है। एक दिन चंदन की कोठरी के बाहर ताला लगाकार गुरूदेव बाहर चले जाते है तब चंदन खिड़की के रास्ते भाग निकलती है। थकी माँदी फटेहाल जब वह अपने पति के घर पहुँचती है तो देखती है उसके पति ने दूसरा विवाह कर लिया और उसी दिन उसकी पत्नी ने पुत्र को जन्म दिया है। विधि के विधान ने उसे वापस चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया अब वह मुक्त बंदिनी सोच रही थी जाये तो जाये कहाँ?

चन्दन (पत्नी) –

चन्दन एक सुशिक्षित एवं अनिद्य सौन्दर्य की स्वामिनी युवती है। उसकी शादी विक्रम से हो जाती है जो कि एक अत्यन्त सम्पन्न परिवार का बिगड़ा हुआ युवक है। चन्दन ससुराल आते ही सास-ससूर, पति, ननद सबका दिल जीत लेती है। चन्दन जब अपने पति के साथ रेल में यात्रा कर रही थी, तब कुछ असामाजिक तत्वों ने उस पर हमला कर दिया; चन्दन अपनी इज्ज़त बचाने के लिए चलती ट्रेन से कूद जाती है; उसे अचेतन अवस्था में एक अघोरी उठाकर ले जाता है और चन्दन भैरवी बन जाती है। इधर चन्दन को मृत मान उसका पति दूसरा विवाह कर लेता है, उधर चन्दन प्रत्येक बात से बेखबर हो पलायन का प्रयास करती है, लेकिन तान्त्रिक की कैद से मुक्त नहीं हो पाती। चन्दन अपनी इज्ज़त को बचाते हुए वहाँ से भाग खड़ी होती है और अपने पति के पास पहुँचती है, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी, उसका

पति उसी दिन बाप बना था, विवश चन्दन उलटे पाँव लौट जाती है। चन्दन न घर की रहती है न घाट की। चन्दन कहाँ जायेगी? ये एक प्रश्न ही रह जाता है।

श्मशान चंपा (1972) –

शिवानी की 'श्मशान चंपा' की नायिका चंपा डॉक्टर है। बहन के अन्तर्जातीय विवाह के कारण उसकी सगाई टूट जाती है। पिता की असमय मृत्यु और सब ओर निराशा और अपमान से बचने के लिए चम्पा माँ को लेकर वीरान प्रदेश में नौकरी करने चली जाती है। माँ को टी.बी. हो जाती है। वह उन्हें सेनीटोरियम पहुँचा देती है। डॉक्टर्स की एक सेमिनार में भाग लेने वह कलकत्ता जाती है। ट्रेन में उसे टिटनेस हो जाता है, वहाँ उसका पूर्व मंगेतर मधुकर उसकी परिचर्या करता है। ठीक होने के बाद वह मधुकर से बिना मिले अपने कार्यस्थल पर लौट आती है। अस्पताल की स्वामिनी कमलेश्वरी के पति व पुत्री की मृत्यु हो जाती है। कमलेश्वरी उसे अपनी दत्तक पुत्री बनाकर सम्पत्ति की स्वामिनी बना देती है।

नायिका 'चंपा' पर किसी लेखक की लिखी उक्त पंक्तियाँ चरितार्थ होती है-

चम्पा तुझमें तीन गुण,
रूप, रंग और बास।
अवगुण तुझमें एक है,
भ्रमर न आवै पास।

'श्मशान चंपा' एक स्वाभिमानी लड़की चंपा की कथा है। बहन की गलती की सजा चंपा को मिलती है उसका रिश्ता ठुकरा दिया जाता है लेकिन वही लड़का उसे बाद में अपनाना चाहता है तब वह उसे ठुकराकर अपना स्वाभिमान बरकरार रखती है, पर पुरूष के समक्ष झुकती नहीं है।

चंपा (डॉक्टर) –

चम्पा अपनी मेंहनत और बुद्धि के बल पर डॉ. की उपाधि को प्राप्त कर सकी थी

डॉक्टर होने का पूरा फर्ज भी उसने हमेंशा निभाया था।

एक दिन जब आधी रात को सेनगुप्त का फोन आता है "मैं सेनगुप्त बोल रहा हूँ डॉ. जोशी। क्षमा कीज़िएगा, इतनी रात को आपको डिस्टर्ब करना पड़ा। पर अचानक मेंरी पत्नी की तबीयत खराब हो गई है। मैं गाड़ी लेकर आ रहा हूँ।"[1]

निरंतर दो रातों से उसे दो कठिन प्रसंगो ने दस मिनट भी सोने नहीं दिया था। लेकिन उसने अपनी अनिद्रा और थकान को भूलकर मरीज को देखने जाना ही पसन्द किया और अपने डॅक्टरी पेशे को पूरी ईमानदारी से निभाया।

चंपा (बेटी) –

चम्पा को अपने पिता की मृत्यु के बाद, छोटी बहन के कलंक और स्वयं अपने दुर्भाग्य ने उसे बुरी तरह झकझोर दिया था। अपने आत्मसंयम; सहिष्णुता एवं प्रतिभा के कारण वह बचपन से ही धरणीधर की लाड़ली पुत्री थी। चम्पा शांत गंभीर थी। माँ को अपनी शादी की चिन्ता करते देख उसने शादी की इजाजत दे दी। लेकिन अचानक लड़के वालों को जुही की मुसलमान युवक के साथ शादी की खबर लग गई और उन्होंने सगाई तोड़ दी। माँ के दिन पर दिन टूट रहे स्वास्थ ने उसे और चिंतित कर दिया था। चम्पा को समझ में आ गया था कि शरीर की व्याधि ही नहीं मन की व्याधि भी माँ को घूला रही है। चम्पा बेटी होने का अपना पूरा फर्ज निभा रही थी। उसने माँ के लिए नौकरानी भी रख दी थी। माँ की तबीयत खराब देखकर वह मन ही मन सिहर उठती थी। उसका अब इस दुनिया में माँ के सिवाय और कोई नहीं था। जब माँ की रिपोर्ट से पता चलता है कि उसके दोनों फेफडों में पैच है तो वह रोने लगती है। दूसरे ही दिन चम्पा माँ को सैनेटोरियम भेजने का इन्तजाम कर देती है।

1- श्मशान चम्पा - शिवानी - पृ. 47

जूही (असत् नारी पात्र) –

जूही चम्पा की छोटी बहन थी। लेकिन दोनो के विचारों में रात दिन का अन्तर होता है। जूही पहले तनवीर बेग को राखी बाँधकर भाई बना लेती है। और बाद में उसी के साथ शादी करके घर से भाग जाती है। एक दिन जूही अचानक चम्पा के समक्ष खड़ी हो जाती है। मयूरी चम्पा को बताती है कि इसका एबार्शन करना है। तब जूही उसे अपनी सारी कहानी बताती है। वह कहती है कि उसका अकर्मण्य पति उसे कुछ नहीं दे पाया। उसकी जिन्दगी केवल पुरूषों तक ही सीमित थी। उसी दिन जूही मर गई और रिनी खान का जन्म हुआ। फिर में क्लब डांसर बन गई। चम्पा सब जानने के बाद एबार्शन करने से मना कर देती है। और एक दिन जूही हत्या के केस में उलझ कर रह जाती है। जिस व्यक्ति ने उसे इस अवस्था तक पहुँचाया था वह उसी की हत्या करके आत्म समर्पण कर देती है।

भगवती (माँ) –

भगवती चम्पा की माँ है जिसे अपनी दोनो पुत्रियों की शादी की चिन्ता है। और वह चाहती है कि जल्दी ही इस काम से वो मुक्ति पा ले। अपने पति की मृत्यु के बाद उसकी जिम्मेंदारी ओर बढ़ गई वह छोटी-छोटी बात पर शकांलू हो चिन्ता करने बैठ जाती है। और एक दिन उसकी छोटी लड़की जूही घर से भाग जाती है तो उसे खून की उल्टी होती है उसे उसी दिन पता चल जाता है कि उसे टी.बी. जैसी भयानक बिमारी हो गई है पर यह बात वह अपनी बेटी चम्पा से छुपा जाती है ताकि वो चिन्ता ना करे। अब उसे रात दिन यही चिन्ता खाये जाती है कि मेंरे जाने के बाद मेंरी बैटी का क्या होगा।

इसीलिए वह उसे शादी के लिए मना लेती है। लेकिन एक दिन लड़के वालो का खत आ जाता है जिसमें वे सगाई तोड़ने की बात करते है। यह खबर पाते ही भगवती जिसने अपने आपको अभी तक सम्भाला हुआ था हिम्मत हार जाती है।

सुरंगमा (1979) –

सामाजिक और राजनितिक दोनों प्रकार की स्थितियों और घटनाओं का समावेश करके लेखिका ने जो प्रस्तुतीकरण किया है वह है 'सुरंगमा'। इस उपन्यास की नायिका सुरंगमा है जिसकी माँ राजलक्ष्मी प्रेम विवाह करती है उसका पति गजानन उसे कष्ट देता है। एक दिन वह गर्भावस्था में ही रेल की पटरी पर आत्महत्या के लिए पहूँच जाती है। राबर्ट नाम का व्यक्ति राजलक्ष्मी को बचा लेता है। वह उससे विवाह करके उसकी संतान को अपना नाम देता है। एक दिन गजानन वापस आकर अपनी पत्नी और पुत्री को अपने घर ले जाता है। सुरंगमा बड़ी होकर मंत्री की पुत्री को ट्यूशन पढ़ाती है। सुरंगमा और मंत्री एक दूसरे की तरफ आकर्षित हो जाते हैं। जब मंत्री की पत्नी को पता चलता है तो वह सुरंगमा को 'वेश्या' कहती है। सुरंगमा 'वेश्या' शब्द को सह नहीं पाती है और अपने पिता 'रॉबर्ट' के पास जाने का फैसला करती है जिसने कभी उसे और उसकी माँ को सहारा दिया था। परन्तु वो अपने इस निश्चय को भूल जाती है जब दिनकर उसे ये चार पंक्तियाँ लिखकर देता है-

''छोटयो घरखानी मने की पड़े सुरंगमा?
मने की पड़े मने की पड़े?
जनालय नील आकाश झरे
सारा नील आकाश झरे
सारा दिन रात हावाय खड़े
सागर दोला..........''[1]

वह अपने निश्चय से डगमगा जाती है। उपन्यास के अन्त में जब वो अपने घर वापस जाती है तो उसका दुराचारी पिता गजानन सीढ़ियों पर पड़ा मिलता है। शिवानी ने 'सुरंगमा' के माध्यम से यह साबित किया है कि उच्च चरित्र वाले मंत्री

1- सुरंगमा - शिवानी - पृ. 182

भी रूप-सौंदर्य के आगे घुटने टेक देते है। मंत्री (दिनकर) सुरंगमा के सौंदर्य के आगे नत-मस्तक होकर कह देता है, ''कभी-कभी राजनीति के गरिष्ठ भोजन के बाद ऐसा पाचक भी अनिवार्य हो जाता है। रूजवेल्ट, नेपोलियन और कहो तो अपने देश की विभूतियों के नाम गिनाता हूँ।''[1]

अपनी प्रेमिका सुरंगमा से मिलने में ख्यातिप्राप्त मंत्री को बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है इसलिए वह विभिन्न प्रकार के रूप बनाकर जाता है। शिवानी के ही शब्दों में ''उसका बहुरूपिया प्रेमी कभी चादर ओढ़कर चला आता कभी सायंकल को दायें-बायें दुध की रिक्त बाल्टियाँ खनखनाता दूध वाला बनकर।''[2] शिवानी जी ने 'सुरंगमा' जैसे यथार्थ वादी उपन्यास में राजनीति का, समाज का, पात्रों का यथार्थ चित्रण किया है।

सुरंगमा (नौकरी पेशा) -

सुरंगमा की माँ ने उसे पढ़ा लिखा कर इस लायक बना दिया था कि वह अपने पैरो पर खड़ी हो सके। सुरंगमा को एक बैंक में नौकरी मिल जाती है। एक दिन उसकी सहेली मीरा उसके लिए एक ट्यूशन लेकर आती है और बोलती है कि ''तु नाही मत करना सुरंगमा तेरे भविष्य के लिए यही ट्ट्यूशन एक दिन असामान्य सिद्ध होगा।''[3] और यही ट्यूशन उसकी पूरी जिन्दगी बदल देता है और वह भी जैसे मजबूर हो जाती है। सुरंगमा जब अपनी शिष्या मिनी के साथ नैनिताल जाती है और साथ में होते है मिनी के पिता मन्त्री दिनकर जो धीरे-धीरे उसकी ओर खींचे चल आ रहे थे। एक दिन दिनकर सुरंगमा की वर्षास्नान देह को बांहो में भर कर चूमने लगती है और वह बेबस कुछ नहीं कर पाती है। इसके बाद तो दिन पर दिन दिनकर की हिम्मत बढ़ती हा चली जाती है और नह उसके घर आने लगता है।

1- सुरंगमा - शिवानी - पृ. 191
2- वही - शिवानी - पृ. 192
3- वही - शिवानी - पृ. 115

फिर सुरंगमा एक दिन ट्यूशन छोड़ने का फैसला कर लेती हैं।

सुरंगमा (बेटी) –

सुरंगमा ने अपनी माँ का तो ध्यान रखा ही लेकिन अपने पिता गजानन की भी बहुत सेवा की। जब उसका बाप नशे में चिल्लाता था तथा पिता के अविवेकी अचरण के बावजूद, उसे गजानन से अनोखा लगाव था, नशे में चूर गजानन को सुरंगमा ही हाथ पकड़ कर पलंग पर लिटा देती । माँ और पिता का वैमनस्य धीरे-धीरे सुरंगमा को अस्वाभाविक रूप से उदासिन बना गया था। माँ की तबीयत खराब देखकर एक दिन सुरंगमा उसका चेकअप कराती है। बड़ी भाग दौड़ के बाद जिस दिन उसे माँ के असाध्य रोग का पता चलता है वह उसके खून के लिए पैसे निकालने घर आती है पर वहाँ कुछ नहीं था। गजानन आज फिर अपनी पत्नि के दुर्दिन में उसी को लूटपाट निर्मम लुटेरे सा फिर अदृश्य हो गया। सुरंगमा फिर माँ के इलाज के लिए अपनी मित्र मीरा से मदद माँगती है। फिर वह माँ को कलकत्ते इलाज के लिए ले जाती है। धीरे-धीरे माँ की हालत में सुधार आने लगता है। लेकिन एक दिन अचानक माँ की तबीयत खराब हो जाती है। वह दर्द से तड़पने लगती है। सारी रात सुरंगमा माँ के पलंग के पास ही बैठी रहती है। पहली बार उस साहसी लड़की की आँखो में आँसू आ गये। जिस अमानवीय साहस से सुरंगमा ने माँ की मृत्यु के कठोर आघात को झेला वह देखने लायक था। वह माँ की शवयात्रा के साथ-साथ घाट तक गई अपने हाथों से उसने माँ को सजाया पैरों में आल्ता; माथे में सिन्दूर, बहुत बड़ी सी बिन्दी, सब कुछ लगाकर कागज पर माँ के आल्ता लगे पैरों की छाप भी उतार ली अपने पूजा घर में टांगने के लिए।

राजलक्ष्मी (भोली युवती) –

राजा प्रबोधरंजन की इकलौती पुत्री थी राजलक्ष्मी। अल्हड़ राजलक्ष्मी का कंठ मधुर था; फिर स्वभाव से ही भीरू शान्त व गम्भीर किशोरी गजानन को बहुत अच्छी

लगी। गजानन राजलक्ष्मी को संगीत सीखाने आता था। मात्र सत्रह वर्ष की अवस्था में ही म्यूजिक ट्युटर के साथ राजलक्ष्मी भाग जाती है। दोनों की वयस में काफी अन्तर था। कच्ची कली सी सांवली राजलक्ष्मी के सलोने चेहरे पर पीढ़ियों के अभिजात्य की सुस्पष्ट छाप थी। कुछ ही महीने में राजलक्ष्मी को अपने जीवन की साघातिक भूल का आभास हो गया था। एक दिन गजानन के अत्याचारों से त्रस्त होकर वह घर से भाग निकली। और आत्महत्या करने के इरादे से आँखे बन्द कर पटरी पर खड़ी हो गई। राबर्ट नाम के व्यक्ति ने उसे जीवन दान दिया। राबर्ट उसे अपनी बहन वैरोनिका के पास ले गया। वैरोनिका को जब उसकी पूरी कहानी पता चलती है तो वह उसे रोबर्ट से शादी करने की सलाह देती है ताकि उसकी होने वाली सन्तान का भविष्य अन्धाकारमय ना हो। और फिर लक्ष्मी गिरजे से लक्ष्मी म्यूरी बनकर रोबर्ट के साथ चली गई। शादी के बाद राबर्ट फिर उसे अपनी बहन के पास छोड़ जाता है। प्रत्येक महिने वह लक्ष्मी के नाम मनिआर्डर भेजता है। फिर एक दिन लक्ष्मी सुरंगमा को जन्म देती है। लक्ष्मी अपने पैरो पर खड़ी होने के लिए एम.ए करती है फिर एक विद्यालय में नौकरी कर लेती है। एक दिन लक्ष्मी नित्य की तरह कॉलेज जाने के लिए तैयार हो रही थीकि उसकी दृष्टि गजानन पर पड़ी जो उसे ही ढूंढ़ रहा था। खूले द्वार से जब उसका दुर्भाग्य अन्दर आया तो भय से उसकी घिग्घी बंध गई और सम्भालने पर जोर-जोर से चिल्लाने लगी। जब रोबर्ट अन्दर आया तो लक्ष्मी शुन्य में ताक रही थी। लक्ष्मी ने अपना विवर्ण चेहरा रोबर्ट की ओर उठाया। जैसे अपनी बेबसी का हाल बताना चाहती हो। फिर वह रोबर्ट को बताती है कि मैं जानती थी एक दिन यही होगा तुम इसे नहीं जानते संसार का कोई भी कुकृत्य इसके लिए असम्भव नहीं है।

राजलक्ष्मी अपनी पुत्री का हाथ पकड़कर चुपचाप गजानन के साथ चल पड़ती है ताकि वैरोनिका और रोबर्ट को अपमानित ना होना पड़े। लक्ष्मी को अब अपने

जीवन की कोई परवाह नहीं थी लेकिन अब उसे अपनी पुत्री सुरंगमा की चिन्ता थी। इसीलिए उसने सोचा कि सुरंगमा को सारी बातें बता देनी चाहिए ताकि उसके जीवन से सबक लेकर वह अपनी जीन्दगी में कोई गलती न करे। लक्ष्मी को धीरे-धीरे बिमारी ने ऐसा घेरा कि फिर मृत्यु आने पर ही वो चैन की नींद सो पाई।

'तरपण'

पुष्पापंत (शिक्षिक) –

शिवानी के उपन्यास 'तरपण' की नायिका ''पुष्पापंत'' गांव की स्कूल में अधायापिका है। किशोरावस्था में एक नर-पशु ने उसके कौमार्यावस्था को भंग किया था। उस आघात के कारण उसकी माता की मृत्यु हो जाती है और पिता आत्महत्या कर लेते हैं, परन्तु पुष्पा हिम्मत नहीं हारती वह स्कूल में अध्यापिका की नौकरी कर लेती है। भाई को पढ़ा-लिखाकर विदेश भेज देती है और स्वयं एक पहाड़ी नौकरानी खिमूली के साथ जीवन व्यतीत करती है। उसका जीवन भी सांसारिक जीवन की एक तरतीब पकड़ लेता है। उसकी स्कूल का एक अध्यापक पीताम्बर पाण्डेय उसके जीवन में आता है। वह प्रणय, परिणय में परिवर्तित हो जाता; परन्तु अकस्मात् ही वही नर-पशु पुष्पा की स्कूल के एक समारोह में मंत्री रूप में जिलाधीश के साथ आता है। प्रतिशोध की अग्नि प्रज्वलित हो जाती है और मौका देखकर पुष्पा उसकी हत्या करके अपनी माता तथा पिता का 'तर्पण' करती है। पुष्पा पंत को एक आदर्श, प्रतिबद्ध, अनुशासन प्रिय और छात्रवत्सल्ला अध्यापिका के रूप में चित्रित किया गया है। वह अपनी छात्राओं को न केवल पुस्तकीय ज्ञान देती थीअपितु जीवनोपयोगी बातें भी उन्हें सिखाती थी। छात्राएं पाठशाला छोड़ जाने के अनेक वर्ष के बाद भी पुष्पापंत से मिलने के लिए आती थी, इससे ही उनकी छात्र-प्रियता का परिचय मिलता है।

कालिन्दी (1999) –

अन्ना नाम की किशोरी वधू को ससूराल में चार सिलाई के मोजे बिनने नहीं आये और उसने एडी की छाँट भी गलत कर दी थी, उसके इस दोष के कारण उसके ससूराल वालों ने जलती लकड़ी से उसके शरीर को दाग दिया और उसे मायके आना पड़ा। वह पन्द्रह वर्षीय किशोरी मायके अकेली नहीं आई थी बल्कि वह अपने गर्भभार के साथ आई थी। अन्ना ने दूध सी उजली कन्या को जन्म दिया नाम रखा कालिन्दी।

अपनी माँ, मामा-मामी के लाड़ प्यार में बड़ी होकर कालिन्दी डॉक्टर बनी। कालिन्दी का विवाह एक डॉक्टर से तय हो गया परन्तु दहेज के लोभी ससुराल पक्ष को दुल्हन बनी कालिन्दी ने बारात सहित फेर दिया।

अपने टूटे सम्बन्ध के प्रत्येक निशान को मिटा कालिन्दी परिवार सहित पहाड़ चली जाती है। वहाँ जाकर कालिन्दी बिखरी जिन्दगियों को संवारती है जैसे लाल मामी की परिचर्या, सरोज का पति गृह वापस लौटना इत्यादि, परन्तु अपनी जिन्दगी नहीं संवार पाती। उपन्यास में घटित कुछ घटनाओं ने कालिन्दी को पुरूष मोह के खिलाफ खड़ा कर दिया।

फिर उसके जीवन में एक ऐसा वाकया घटा जिसके लिए वह स्वप्न में भी प्रस्तुत नहीं थी। उसका मंगेतर जिसे कालिन्दी ने दुत्कार कर बारात सहित लौटा दिया था, एक बार फिर बिना बारात के कालिन्दी को अपनाने के लिए आ गया था। कालिन्दी दूसरी बार भी उसे अस्वीकार कर देती है। कुछ दिनों बाद वह कालिन्दी को पत्र लिखता है जिससे वह पूर्णतः निर्दोष साबित हो जाता है, मगर उस पत्र पर कोई पता ही नहीं था। कालिन्दी को पश्चाताप होता है वह हमेंशा के लिए अकेली रह जाती है। कालिन्दी सम्बन्धो को धूप से धरती की तरह तपा हुआ देखना चाहती थी, पर हर जगह एक विचित्र किस्म के ठंडेपन का अहसास रह जाता है।

कालिन्दी (चिकित्सक) (दहेज के खिलाफ) -

'कालिन्दी' एक आदर्श चरित्र है, जिसके चारों तरफ कथानक चलता है। कालिन्दी शिवानी जी का सामाजिक उपन्यास है, जिसमें नारी संवेदना और उसकी नियति का यथार्थ चित्रण है जो मर्म को छूकर उसे उद्धेलित कर देता है। नायिका कालिन्दी से शिवानी जी ने दहेज जैसी कुप्रथा के खिलाफ बहुत ही अच्छे संवाद बुलवाये है, ''आपका बेटा हमें नहीं खरीदना है,जाइये इसी क्षण अपनी बारात लौटा ले जाइये और जहाँ अपने पुत्र का मुँह माँगा दाम मिले वही बेच आइये, बड़ा आश्चर्य है कि इतने समृद्ध व्यापारी होने पर भी आपको अपना बेटा बेचना पड़ा वह भी कुल अस्सी हजार में।''[1] अपने विवाह के फेरो में कालिन्दी भड़क उठती है, जब उसे पता चलता है कि वर पक्ष के लोग कुछ रुपयों की खातिर बारात वापस ले जाने की बात करते हैं। कालिन्दी के मामा रुपये देने को सहर्ष तैयार हो जाते हैं, लेकिन कालिन्दी विवाह की वेदी से उठकर बारात वापस भेज देती है। दहेज के विरूद्ध कदम उठाने वाली कालिन्दी पेशे से चिकित्सक है, जीवन का सफर अकेले तय करने में उसका आत्मविश्वास उसका साथ देता है। कालिन्दी मुफ्त में इलाज करती है और अपने जीवन का लक्ष्य मरीजों की सेवा बना लेती है।

कालिन्दी के बचपन के साथी बिरजू की जब मृत्यु हो गयी तब एक क्षण को उसे लगा; वह कफन फाड़कर बैठ गया है और उसे चिढ़ा रहा है-

''कालिन्दी पंत
देखने की संत
आग सी चुडकंत
हृदय में बसंत।''

उपन्यास के अन्त में उसका बारात वापस ले गया दूल्हा बिना बारात के कालिन्दी

1- कालिन्दी - शिवानी - पृ. 138

को लेने आता है और स्वयं को निर्दोष भी साबित कर देता है; लेकिन कालिन्दी का स्वाभिमान उसके साथ जाने से इन्कार कर देता है। कालिन्दी पूरा सफर एकाकी रहकर तय करती है।

अतिथि –

अतिथि उपन्यास की नायिका श्यामाचरण जी की पुत्री जया है। जया का विवाह श्यामाचरण जी के बचपन के मित्र माधवबाबू (जो कि अब मुख्यमंत्री है) के पुत्र कार्तिक से तय हो जाता है। कार्तिक और जया के विवाह के एक ही माह बाद जया को अपने पति की चारित्रिक विकृतियों व अन्य बुरी आदतों का पता चलता है तो वह अपनी ससुराल को छोड़कर पीहर चली जाती है। माधवबाबू के बार-बार मनुहार करने पर भी जया उस जीवन में दुबारा नहीं जा पाती। जया अपनी ताई के साथ मौसम बदलाव के लिए बंगलोर चली जाती है वहाँ एक संभ्रांत परिवार का युवक शेखर जया से प्रेम कर बैठता है। वह जया को विश्वास दिलाता है कि वह कार्तिक से उसको तलाक दिलवाकर उससे विवाह करेगा। जया अपने घर वापस आ जाती है और कलेक्टरी के इम्तिहान में बैठती है। जया इस परीक्षा को प्रथम बार में प्रथम स्थान से उत्तीर्ण करती है। फिर वो क्षण भी आ जाता है जब वह शेखर, कार्तिक के प्रत्येक साये से दूर नौकरी पर चली जाती है।

शिवानी जी ने 'अतिथि' के माध्यम से माधव बाबू को माध्यम बना एक ऐसे मंत्री का चित्रण किया है जो ऊँचे चरित्र का है, ईमानदार है, आस्तिक है और शास्त्रों को मानने वाला है। स्वयं माधवबाबू के शब्दों में ''मैं ठीक कह रहा हुँ चन्द्रा। कभी मुझे लगता है, हमारे शास्त्रों में ठीक कहा है, कि पूर्व जन्म के पाप, हमें इस जन्म में ठीक बैसे ही ढूँढ़ लेते हैं, जैसे क्षुधातुर बछिया माँ के स्तन को ढूँढ़ लेती है।''[1] कुल मिलाकर अतिथि ''जिसकी कहानी सबला स्त्री के स्वाभिमान और संकल्प की

1- अतिथि - शिवानी - पृ.1

रक्षा की वकालत करती है; लिज-लिजी भावुकता और परम्परागत गुलामी में जीने वाली कमजोर नारी नहीं है जया, ना ही बाढ़ भरी नदी तरह बह जाने वाले अस्थिर इरादे ही है। वह कार्तिक की पत्नी होकर उसकी मक्कारियों के साथ समझौता नहीं कर सकती, वह पुरूष सम्पर्क के स्वाभाविक आवेगों को भी नकारती है और शेखर के इरादों के साथ कोई साझा नहीं करती। जया उस नारी का प्रतीक है, जो दबी ढकी धुट रही स्त्रियों को सर ऊँचा करके जीने की प्रेरणा देती है।''

जया (स्वाभिमानी आई.ए.एस) –

गरीब परिवार की कुशाग्र जया एक मंत्री के पुत्र से ब्याह दी जाती है। मंत्री का पुत्र कार्तिक, मद्यप , उद्दण्ड, कामी और क्रोधी है। जया उसे राह पर लाने का पूर्ण प्रयत्न करती है और असफल होकर अपने माँ-बाप के यहाँ लौट आती है, जया कार्तिक को सुधारने में असफल होती है, अन्य किसी क्षेत्र में नहीं।

जया पहली बार में ही आई.ए.एस की परीक्षा में प्रथम स्थान पर आती है, अखबार में छपे जया के फोटो से हर तरफ प्रशंसा की लहर दौड़ पड़ती है, जया के ससूर उसे बधाई सहित लिवाने आते है, लेकिन शिवानी की प्रत्येक नायिका की तरह जया उनके साथ जाने से मना कर देती है और दूर बहूत दूर निर्जन स्थान पर अपनी नियुक्ति करा लेती है।

कैंजा (1975) –

लघु उपन्यासों की शृंखला में लेखिका ने कैंजा के माध्यम से प्रेम और विवाह के प्रश्न को उठाया है। कैंजा का नायक सुरेश भट्ट मोहित तो नन्दी तिवारी पर होता है, परन्तु नन्दी के पिता अपनी पुत्री का हाथ अकर्मण्य शराबी, जुआरी को थमाने से अच्छा उसे ब्रह्मकुण्ड की धारा में बहाना ठीक समझते हैं। सुरेश, नन्दी को न पा सकने के कारण अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है और सैक्स मैनियाक बनकर कई औरतों की जिन्दगी खराब करता है। सुरेश एक पागल कमुली को अपनी

हवस का शिकार बनाता है कमुली एक पुत्र को जन्म देकर चल बसती है नन्दी उस पुत्र को शहर ले आती है। अब वह डॉ. नन्दी तर्वे है। उसका पुत्र एक दिन विद्यालय से लौटने पर पूछता है ''माँ मेंरे डैडी कहाँ है ?'' नन्दी ने अपने पुत्र को अच्छे संस्कारों से पाला था वह उस बच्चे के प्रत्येक संशय का निदान करने के लिए पहाड़ वापस जाती है। वहाँ सुरेश भट्ट से विवाह कर रोहित को बताती है कि यही तुम्हारे पिता हैं। विवाह के एक दिन बाद ही रूग्ण सुरेश भट्ट की मृत्यु हो जाती है। नन्दी जब रोहित को लेकर शहर लौट रही थी तभी अचानक पगली कमुली की माँ रोहित के सामने बता देती है कि वह उसकी नानी है। नन्दी तो एक पल के लिए लगता है कि उसने अपना पुत्र खो दिया, लेकिन अगले ही पल उसे राहत मिलती है जब उसका पुत्र कहता है मैं तुम्हें 'कैंजा' नहीं कहुंगा तुम मेंरी माँ हो। उपन्यास का शीर्षक 'कैंजा' से अर्थ है, पहाड़ में सौतेली माँ को कैंजा कहते है।

डॉ. नन्दी (माँ) –

नन्दी तर्वे औरों के लिए जीने वाली नारी है; स्वार्थपरता से दूर नन्दी एक 'सैक्स मैनियाक' की नाजायज औलाद को स्वयं पालती है; उसे पिता का हक दिलाने के लिए वह उस कामाँध से विवाह भी करती है, लेकिन विवाह के कुछ ही घण्टों पश्चात् वह व्यक्ति मर जाता है। नन्दी तर्वे एक बिगड़े हुए इन्सान की औलाद को अपनाती है, बड़ा होने पर वह बच्चा उसे 'माँ' कहता है और पिता के बारे में पूछता है, नन्दी उसके प्रश्न मात्र को शांत करने के लिए सुरेश भट्ट से शादी करती है और कुछ ही घण्टों में सुहागिन से विधवा बन जाती है।

नन्दी तर्वे हमेंशा दूसरों के लिए जाती है, तभी तो एक ही दिन में वह कुँवारी, सुहागिन और विधवा बनी है।

लेकिन अच्छे लोगों का भगवान भी साथ देता है इसलिए जब उसके पुत्र को पता चलता है कि वो उसका बेटा नहीं है तो वह नन्दी से कहता है कि वह उसे ही माँ

कहेगा। उसे कभी 'कैंजा' कहकर नहीं पुकारेगा। और नन्दी को उस पल 'माँ' शब्द सुनकर ऐसा लगता है कि उसे सब कुछ मिल गया।

विषकन्या (1977) -

विषकन्या दो जुड़वाँ बहनों की कथा को आधार बना लिखा गया मर्मस्पर्शी उपन्यास है। दामिनी और कामिनी है तो जुड़वाँ बहने, लेकिन दोनों के स्वभाव में अंतर है और दोनों का सौंदर्य एक सा है। इसी कारण बीस मिनट छोटी बहन कामिनी अपनी बहन दामिनी से एक से चेहरे के कारण कई बार फयदा उठा जाती है। कामिनी जिस भी वस्तु की प्रशंसा करती है वह वस्तु नष्ट हो जाती है। रूप साम्य के कारण वह जीजा रोहित पर भी डोरे डालती है, पर रोहित की प्रेमनिष्ठा दामिनी और कामिनी के अन्तर को समझ लेती है; अतः वह कामिनी के षडयंत्र में नहीं फँसता। एक दिन रोहित को सर्प डस लेता है। कामिनी समाज से दूर जाकर एकाकी जीवन व्यतीत करती है। कामिनी रहस्यपूर्ण ढंग से एक कोठी में रहती है उसका एक भी पड़ौसी उसकी किसी भी गतिविधि को नहीं देख पाता। उपन्यास रहस्यमय है। उपन्यास की नायिका अपने चरित्र में अद्‌भुत है, जो अपने बारे में कई तरह के अंधविश्वास पाले हुए हैं और अभिशप्त होकर दुनिया से मुँह छिपाती फिरती है, इस युवती के प्रति शिवानी की संवेदना का अभूतपूर्व रेखांकन है, जो पाठक को भीतर तक मोह लेता है।

कामिनी (ऐयर होस्टेस) अभिशप्त नारी-

विषकन्या की नायिका कामिनी विचित्र स्वभाव की लड़की है। वह जिस भी चीज की प्रशंसा करती है, वह वस्तु नष्ट हो जाती है, उसके इसी अवगुण की वजह से वह घर में उपेक्षित है। कामिनी ऐयर होस्टेस का कार्य करती है। हवाई यात्राओं के दरम्यान वह रोहित के प्रति आकृष्ट होती है। परन्तु उसका विवाह उसकी बहन दामिनी से हो जाता है। दामिनी और कामिनी जुड़वा बहनें हैं। कामिनी एक अभिशप्त

नारी है यदि वह किसी व्यक्ति की भी तारिफ कर देती है तो वह मृत्यु को प्राप्त कर लेता है। झील में नहाते हुए अपने बहनोई (जीजाजी) की वक्षस्थल की प्रशंसा करती है तो झील में कोबरा के डस लेने से रोहित की मृत्यु हो जाती है। इस घटना से आहत होकर कामिनी पुनः अपनी हवाई यात्राओं पर चली जाती है। इन हवाई यात्राओं में उसकी मुलाकात मिस्टर डिसोजा से होती है। डिसोजा एक सैक्स मेनियाक व्यक्ति है; एक विमानी दुर्घटना में कामिनी और डिसोजा साथ-साथ होते है, दुर्घटना के कारण चारो तरफ मलबा और लाशें पड़ी हुई थी। ऐसे विभस्त वातावरण में भी डिसोजा कामिनी के साथ अपनी यौनतृप्ति करता है। किसी बात को लेकर कामिनी मिस्टर डिसोजा की तारीफ करती है, और अंततः झील का विषैला पानी पीने से उसकी मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार अभिशप्त का परिणाम यहाँ भी उसे भुगतना पड़ता है। लेकिन ये स्भावगत विशेषता तो ईश्वर प्रदत्त थी, उसकी अर्जित की हुई नहीं थी। कामिनी पूरे कथानक में समाज से दूर रहती है;क्योंकि उसके मुख से निकली प्रशंसा उस वस्तु का विनाश कर देती है।

रति विलाप (1977) – रति विलाप नामक उपन्यास में लेखिका को उनकी सहेली अनुसूया मंदिर के एकान्त अहाते में बैठकर अपने वैधव्य जीवन की कथा सुनाती है। उसका विवाह किन परिस्थितियों में पागल विक्रम कापडिया से हुआ और कैसे वह एक दिन उन्मादवस्था में अनुसूया को गोद में लेकर छत से कूदने लगा। ईश्वर ने उसे तो बचा लिया और पति की मृत्यु हो गई। उसके बाद घर बार बेचकर श्वसूर और अनुसूया बम्बई जाकर रहने लगे। वहीं उसने साड़ियों का कारोबार शुरू किया। फिर एक पतिहन्ता और जेल से छूटी हीरा नामक लड़की को उसने अपने यहाँ नौकरानी के रूप में रख लिया। कारोबार के सिलसिले में अनुसूया बाहर चली गयी और जब लौटकर आयी तो पता लगा कि शाम को उसके ससुर कहीं भाग गये। फिर एक दिन ससुर के खून होने की खबर मिली, परन्तु हीरा का कहीं भी कोई

पता नहीं चला और एक दिन अनुसूया को होटल में हीरा एक आदमी के साथ दिखाई दे जाती है। हीरा के साथ जो बच्चा था उसकी आँखों में अनुसूया ने हू-ब-हू अपने श्वसूर की तस्वीर देखी इस उपन्यास में नियति के चक्र में फँसी एक नारी के जीवन की कहानी है। रतिविलाप विवाह और वैधव्य का अभिशाप सहती नारी की अनोखी दर्दभरी दास्तान है। साथ ही लेखिका ने यह भी दर्शाया है कि एक बुजुर्ग व्यक्ति को भी नारी देहाकर्षण में फँसा सकती है।

अनुसूया (पढ़ी लिखी मेंहनती विधवा नारी)-

अनुसूया एक मेंहनती नारी है जो जीवन से हार नहीं मानती। अनुसूया एक पागल व्यक्ति की पत्नी है; जो अपने उन्माद से अनुसूया को कष्ट पहुँचाता है और एक दिन अनुसूया को गोद में उठाकर छत से कूद जाता है; जिसमें वो खुद तो मर जाता है और अनुसूया बच जाती है। पुरानी स्मृतियों से पीछा छुड़ाने के लिए अनुसूया अपने वृद्ध ससुर को लेकर नये शहर में चली जाती है, व व्यापार शरू करती है। अनुसूया के पाँव कारोबार में जमें ही थे कि उसे एक और झटका उसके ससुर देते है एक किशोरी के साथ भाग कर।

अनुसूया का जीवन एक ओर उलझ कर सुलझा था तो दूसरी ओर सुलझकर उलझ गया था। पिछले जीवन की कष्टकर घटनाएँ, जिन्हें अनुसूया झटक देना चाहती थी और आगे ऐसा घट गया जिसे लाख चाहकर भी झटक न सकी।

माणिक (1977) -

'माणिक' उपन्यास में स्कूल इंस्पेक्ट्रेस नलिनी मिश्रा ने अवकाश प्राप्ति के पश्चात् शहर से बहुत दुर तक अनोखी पिरामिडनुमा वाटिका में नौकरानी लक्ष्मी के साथ वानप्रस्थ जीवन जीना आरम्भ किया। एक अपरिचित युवती दीना बाटलीवाला के अचानक उसके जीवन में आने से स्वच्छन्द यौवना का भुखा शेर दहाड़ उठा। उसकी इस प्रोढ़ावस्था में दीना तो दम्पति की भाँति प्रेम जताने लगी। इतनी

परिपक्व अवस्था में भी नलिनी जैसी शुष्क; सनकी एवं संयमी महिला को भी सम्मोहित कर दिया कि दीना के व्यक्तिगत जीवन में झाँकने तक की परवाह नहीं कि फिर भला उसके स्वार्थी तथा कातिल स्वरूप का पता कैसे चलता? अन्त में वह उसे लूटकर चली जाती है। नलिनी मिश्रा अपनी ढलती उम्र में आकर्षण के अंधापे का शिकार हो जाती है। उपन्यास की कथा एक अविवाहित बड़ी बहिन के त्याग और तप तथा फिर उसके अन्तर में उभर कर आने वाली यौन कुण्ठा से सम्बन्धित है। 'माणिक' एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है जिसमें लेखिका ने सिद्ध किया है कि संयम के नाम पर दबायी गई यौन-भावना से बचना असम्भव नहीं तो मुश्किल अवश्य है। जब यह उभरती है तब मनुष्य किसी भी संग या सहारे की तीव्र आवश्यकता महसूस करता है।

नलिनी मिश्रा (अध्यपिका) –

नलिनी मिश्रा एक संयमित, अनुशासित और कठोर व्यक्तित्व की स्वामिनी थी। उसकी सभी छात्राऐं उसके इसी व्यवहार के कारण उससे बहुत डरती थी। प्रिंसीपल के रूप में जिसभी जिले मैं उसकी नियुक्ति होती हफ्ता बीतते न बीतते उसकी बदली की मनौतियाँ मानने में छात्राएं और मास्टरनियाँ मंदिर मजारों में दुहरी होने लगती। कभी भी किसी ने उसे हँसते हुए नहीं देखा था, पदोन्नति होकर वह इंस्पेक्ट्रेस बनी तो स्वभाव और भी उग्र हो गया। नलिनी को एकांतवास ही प्रिय था। अपनी एकांतवास की वह इतनी अभ्यस्त हो चुकी थी कि कभी-कभी कोई पुरानी छात्रा या शिक्षिका उससे मिलने आती तो उसे अच्छा नहीं लगता था।

नलिनी मिश्रा (बड़ी बहन)

नलिनी ने एक बहन के रूप में अपना कर्तव्य भलिभांति निभाया था। नलिनी ने अपनी छोटी बहन को पढ़ाया और उसका विवाह किया। नलिनी ने अपनी शिक्षा समाप्त कर नौकरी का कार्यभार सम्भाला तब रम्भा इंटर में पढ़ रही थी। बोर्डिंग

से जब रम्भा छुट्टियों में घर आती तो अपनी बड़ी बहन से ढ़ेरो फरमाईशे करती थी। बी.ए की परिक्षा के बाद रंभा ने एक नई जिद पकड़ ली वह गाना सीखेगी। सरल नलिनी ने भी बिना सोचे समझे ही हाँ कर दी। फिर एक दिन रंभा उसी संगीत शिक्षक के साथ भाग रही थी तो नलिनी ने जिस गहरी सूझबूझ का परिचय दिया वैसा शायद कोई बुजुर्ग भी नहीं दे पाता। जब रंभा का प्रेमी काउंटर से टिकट ले रहा था तब ही वह चुपचाप अकेली खड़ी छोटी बहन के पीछे खड़ी हो गई और उसे चुपचाप घर ले आई। फिर वह रंभा को प्यार से समझाती है लेकिन तब तक रंभा अपनी जिन्दगी की सबसे वड़ी भूल कर चुकी थी। और उस भूल को सुधारने नलिनी कहाँ नहीं भटकी। फिर बड़ी धूमधाम से अच्छी जगह रंभा का विवाह कर दिया। उसने अपने हिस्से की भी सारी चिजे रंभा को दे दी। जिस औदार्य से नलिनी ने रंभा का कार्य भार संभाला था वैसा तो शायद कोई माँ भी नहीं कर सकती।

नलिनी मिश्रा (यौन कुंठित नारी)

नलिनी मिश्रा आजीवन कौमार्यव्रत लेने का निर्णय लेती है और इसे निभाती भी है। वह स्वयं अपनी छोटी बहन की शादी कर देती है और खुद अविवाहित रहती है। ऐसी बात भी नहीं थी कि वह कभी अपने दृढ़ संकल्प से डगमगाई ना हो,'' न जाने कितनी ममेंरी, चचेरी बहनों के विवाह में, उनके सजीले नौशों को देख; उसने भी निद्राविहीन विभावरी में वधूवेश में अपने को काल्पनिक दर्पण में निहारा था।''[1] लेकिन फिर भी नलिनी ने अपने आपको संयम की डोरी से बाँध के रखा और कोई उसे उसके निर्णय से हटा नहीं पाया। नलिनी मिश्रा के एकाकिनी जीवन में दीना नाम की नारी का सामीप्य और स्पर्श उसे असामान्य बना देता है। और उसके यौवन का भूखा शेर अधेड़ावस्था में भी गर्जना कर उठता है। और फिर नलिनी सम्भलना चाह कर भी सम्भल नहीं पाती। एक दिन नलिनी की बहन रंभा को जब

1- माणिक - शिवानी - पृ. 31

दीना के बारे में पता चलता है तो वह चुपचाप अपनी बहन से मिलने आती है। रंभा जब उन दोनो की हरकते देखती है तो उसे बहुत दुख होता है और वह वापस लौट जाती है। रंभा सोचती है कि जीजी ने जो अविवाहित रह प्रकृति को चुनौती दी थी उसी का प्रतिशोध ले रही थी क्या प्रकृति ? और इसी बात का फायदा उठाया था उस छलनामयी रूपसी ने सबकुछ बटोरकर ले गई और नलिनी का जीवन भी समाप्त कर गई। संयम से दबाई गई यौन भावनाएँ कभी भी जागृत हो सकती है और फिर वो जो विनाश लाती है उसे देखने के लिए शायद तोई बच भी नहीं पाता है। संयम के नाम पर दबाई गई यौन भावना यौन कुण्ठा में परिवर्तित हो जाती है। यौन भावना को दबाना असम्भव तो नहीं, लेकिन मुश्किल अवश्य है। यही चरित्र नलिनी मिश्रा का है, नलिनी 'समलैंगिक' आकर्षण की शिकार है।

रथ्या (1977) -

'रथ्या एक अल्हड़ ग्रामीण युवती की अन्तर के दर्द की कसक भरी कहानी है। वह अनाथ है व बचपन से ही अपनी बुआ के पास रहती है। वह गाँव के वैद्यजी के पुत्र विमलानन्द को चाहने लगती है पर कुण्डली न मिल पाने से उनका विवाह नहीं हो पाता। एस दिन बसंती विवश होकर गाँव में आये सर्कस वालों के साथ घर छोड़कर भाग जाती है। वहीं वह सर्कस के द्वारा खूब प्रशंसा प्राप्त करती है। सर्कस का मैनेजर ही उसका शील भंग करता है। बसंती वहाँ से भी पलायन करके एक विदेशी महिला के यहाँ आश्रय पाती है। वह महिला उसे नृत्य में पारंगत कर विभिन्न नामों से भारतीय एवं पाश्चात्य नृत्य प्रस्तुत करा प्रसिद्धि एवं प्रशंसा प्राप्त कराती है। बसंती अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाने के लिए एक बार फिर भाग जाती है। कैबरे नर्तकी बन अत्यन्त वैभव के बीच भी बसंती रोती रहती है। किसी अन्तस के कोने में बैठे प्रेमी से ठुकराये जाने पर जीवन की परिणति इतनी भयानक हो सकती है यह इस लघु उपन्यास में देखा जा सकता है। यह उस युवती के साथ-साथ ''एक

ऐसे ग्राम्य युवक की कहानी है जो अपने प्रति किसी युवती के असीम प्रेम को पहचान तक ना सका।''[1]

संक्षेप में हम कह सकते है कि 'रथ्या' एक ऐसी कथा है जो प्रत्येक सहृदय और संवेदनशील पाठक को व्यथित कर डालने में पूर्ण समर्थ है। रचना की संप्रेषणीयता उल्लेखनीय है।

बसंती (अल्हड़ ग्रामीण युवती) -

बसंती निश्छल, अल्हड़, मासूम ग्रामीण युवती है, जिसका कसूर इतना ही है कि वह गाँव के छोटे वैद्य से प्रेम कर बैठती है। कुण्डली न मिलने पर उनका विवाह नहीं हो पाता। इसी दुःख के कारण बसंती गाँव छोड़कर भाग जाती है। बसन्ती अपनी छोटी सी उम्र में दुनिया के बहुत से रंग-ढ़ंग देखती है, उसे पुत्री मानने वाला इन्सान ही उसका शील भंग करता है, तदुपरान्त गाँव की बसन्ती भोली न रहकर चपला कैबरे नर्तकी बन जाती है। एक दिन वह अपनी बुआ के लिए पैसे भेजती है। मनीआर्डर पर विमल बसंती का पता देख उससे मिलने जाता है, लेकिन अब वह विवाहित है और पिता भी। वहाँ जाकर वह बसंती की शानशौकत देखकर अचंभित होता है। जब बसन्ती अपने पैसे का रहस्य खोलती है तो विमल उसे इस नीच कार्य को छोड़कर अपने साथ चलने की बात कहता है। बसंती की दी हुई विभिन्न भेटों को छोड़कर वह बसंती के घर तक आने वाली सड़क को 'रथ्या' (वेश्या के घर की ओर आने वाली सड़क) कहकर चला जाता है।

कैबरे नर्तकी बन अत्यन्त वैभव के बीच भी बसंती रीती की रीती है रहती है।

गेंडा(1918) -

लघु उपन्यास 'गेंडा' राज और सुवर्णा दो सहेलियों की कहानी है। राज प्रत्येक प्रतियोगिता में सुवर्णा को हराती है परन्तु विवाह के क्षेत्र में वह हार जाती है। राज

1- रथ्या - शिवानी - आवरण पृष्ठ से

का पति सम्पन्न हैं, किंतु सूरत से गेंडा है। राज का पति वेद जब विदेश चला जाता है तो वह सुवर्णा के यहाँ रहने लगती है। राज के गर्भ में सुवर्णा के पति की संतान है। सुवर्णा एक मौलवी के पास जाकर इस रहस्य को खोलती है। विषाक्त भोजन करने के कारण राज की मृत्यु हो जाती है।

शिवानी के इस उपन्यास से यह सिद्ध हो जाता है कि नारी का दुर्बल पक्ष है कि वह अपनी सौत नहीं देख पाती, उसे मिटाने में चाहे; अपने पति की आत्मीयता में भी दरार पड़ जाए। वह उसे हटाके ही दम लेती है।

सुवर्णा दत्ता (भारतीय नारी) –

सुवर्णा का विवाह एक आर्मी आफीसर से हो जाता है। सुवर्णा सौम्य, शान्त, गम्भीर और एकनिष्ठ प्रेम की पक्षधर है। सुवर्णा अपने पति तथा बच्चों के साथ सुखी जीवन बिता रही थी। परन्तु उसके इस सुखी वैवाहिक जीवन में राज झंझावत की भाँती आती है। और वह अपनी सहेली सुवर्णा के पति को अपने मोह जाल में फँसा लेती है। और सब कुछ तहस-नहस कर डालती है। सुवर्णा को यह सब बर्दाश नहीं होता। सुवर्णा अपनी सहेली से अपने पति की यह निकटता सहन नहीं कर पाती है और राज को रास्ते से हटाने के लिए जन्तर-मन्तर और मौलवी; दरगाह क आसरा लेती है। सुवर्णा दत्ता एक पूर्ण भारतीय नारी होने के कारण अपने पति को बँटता हुआ नहीं देख सकती है और इसीलिए वह अपनी सहेली से प्रतिशोध लेती है। लेकिन अपने पति की आत्मीयता खो देती है।

राज (असत् नारी पात्र) –

राज का विवाह विदेश में स्थित एक धनी व्यापारी से होता है। राज प्रेम की एकनिष्ठता में विश्वास नहीं करती है। राज मेहरा शुरू से ही काफी शोख और चंचल है। वह अपनी बचपन की सहेली सुवर्णा के सुखी संसार में आग लगा देती है। सहेली होकर भी अपनी सहेली को धोखा देती है और सहेली के पति को फँसाकर उससे

गर्भवती भी हो जाती है। राज प्रत्येक क्षेत्र में सुवर्णा को हराती आई थी। लेकिन विवाह के क्षेत्र में वह हार जाती है क्योंकि सुवर्णा का पति बहुत खूबसूरत होता है और उसका पति उतना ही बदसूरत इसीलिए वह उसे 'गेंडा' कहकर सम्बोधित करती थी। लेकिन अन्त में उसे अपने किये कि सजा मिल जाती है।

कृष्णवेणी (1981) –

शिवानी जी का 'कृष्णवेणी' एक ऐसे मार्मिक प्रेम से परिपूरित लघु उपन्यास है जो कि छोटा होने पर भी पाठकों के हृदय को छू जाता है। इस उपन्यास की कथावस्तु के अन्तर्गत नायिका कृष्णवेणी है जो कि काली होने पर भी आकर्षक व्यक्तित्व की धनी है, भास्करन से विवाह करना चाहती है लेकिन, उसके माता-पिता द्वारा इसकी स्वीकृति नहीं दी जाती क्योंकि भास्करन के पिता को गलित कोढ़ है, ऐसे कोढ़ी के बेटे से वे अपनी पुत्री का विवाह नहीं करना चाहते। वेणी अपने दृढ़ निश्चय पर ओडग है उसे दिव्य दृष्टि प्राप्त है जिससे वह सबका भविष्य बता देती है। एक दिन वह अपना भविष्य भी बता देती है कि वह कार दुर्घटना से मृत्यु को प्राप्त होगी और ऐसा होता भी है; वेणी कार दुर्घटना में मारी जाती है। 'कृष्णवेणी' की वेणी मृत्युपरांत भी समुद्र किनारे भटकती दिखाई देती है तब अधूरे प्रेम की भटकन पर पाठकों को विश्वास न आने पर भी करना पड़ता है।? इस उपन्यास में शिवानी ने कुष्ठ रोग की समस्या को कथा का आधार बनाया है।

कृष्णवेणी (प्रेमिका) –

कृष्णवेणी एक अद्वितीय चरित्र है, जिस पर पूरा उपन्यास टिका है। साहित्य के सुरम्य नन्दन कानन में जो विविध फूल शिवानी ने खिलाये है, कृष्णकली का चरित्र उसमें बेजोड़ है।

वह अपने प्रेमी भास्कर से विवाह करना चाहती है। माता-पिता द्वारा स्वीकृति ना मिलने पर भी वो अपने फैसले पर अडिग रहती है। प्रेम को महत्व देने वाली

कृष्णवेणी प्रेम को परिणाम देने से पहले ही चल बसती है। लेकिन वह मरी कहाँ थी, समुद्र तट पर टहलती वह अधूरे प्रेम की अतृप्त आत्मा थी, जिसने लोगो को यह मानने पर विवश किया सच्चा प्रेम यदि पूर्णता न ले पाये तो वह कृष्णवेणी बनं जाता है।

स्वयंसिद्धा (1987)-

शिवानी का 'स्वयंसिद्धा' एक नारी के संघर्ष की गाथा है ऐसा संघर्ष जो कि वह गलत फहमी की शिकार होकर करती है। उपन्यास का कथानक माधवी को केन्द्र बनाकर घूमता है। उसका विवाह कौस्तुभ नामक सीधे-सादे व्यक्ति से होता है। परन्तु राधिका नाम की लड़की माधवी से क्रूर परिहास कर बैठती है कि ''मैं तुम्हारी सौत हूँ'' यही परिहास इकलौती; लाडली, जिद्दी, संस्कारशील माधवी के अविश्वास का कारण बनाता है और वह अपने पति से अलग हो जाती है। माधवी मेंहनत करके वरिष्ठ सरकारी अफसर बन जाती है। अन्त में कौस्तुभ की बिमारी के बारे में सुनकर स्वाभिमानी माधवी उस तक जाती है लेकिन तब तक कौस्तुभ की मृत्यु हो जाती है।

'स्वयंसिद्धा' एक औरत के किये हुए परिहास से दूसरी औरत का जीवन तबाह करने की कहानी है।

माधवी (विवेकहीन अहंकारी नारी) -

माधवी आत्मविश्वास से परिपूर्ण चरित्रवान नारी है। माधवी जब विवाह करके अपने पति के घर आती है तब प्रथम रात्री को ही एक मुर्ख लड़की के क्रूर परिहास करने पर 'मैं तेरी सौत हूँ' सुनकर माधवी का विवेक साथ ना दे सका और वह उसी क्षण अपने पति का घर छोड़कर चली जाती है। माधवी मेंहनत कर अफसर बन जाती है, पद का गौरव उसके अहेकारी स्वभाव को और भी अहंकारी बना देता है। माधवी नौकरी करके मान, मर्यादा, प्रतिष्ठा सब पा लेती है, लेकिन पुरूषों के लिए

अच्छी सोच नहीं रख पाती। अन्त में माधवी को अपने अविवेक से किये गये फैसले पर पश्चाताप होता है, जब उसका पति अपनी बेगुनाही का सबुत देकर इस दुनिया से चला जाता है।

विवर्त (1984) -

प्रस्तुत उपन्यास में भी शिवानी यह सिद्ध करना चाहती है कि मनुष्य केवल विधि के हाथ का खिलौना मात्र है। यह एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। जो वैवाहिक समस्या पर निर्भर है तथा मानव जीवन की रहस्यमयता का एक विलक्षण पहलू प्रस्तुत करता है। हीरा की सात पुत्रियों में से ललिता डबल एम.ए करके एक स्कूल की हेडमास्टरनी है किन्तु नियति के चक्र में फँस कर विवर्त की और खींची जाती है। वह एक अनजान से विवाह कर लेती है। वह उसे आश्वस्त करके परदेश चला जाता है। एक साल तक कोई संदेश न पाकर गरीब बाप सबकुछ बेचकर उसे लन्दन भेजते है किन्तु वहाँ पहुँचकर वह उसकी पत्नी, बच्चे आदि को देखकर बूत सी खड़ी रह जाती है।

वह ललिता का परिचय किसी अनजान व्यक्ति सा सभी के साथ करवा के बाहर चला जाता है। ललिता एक नीग्रों की सहायता से वापस भारत लौट आती है। लन्दन में काले गोरे का वर्ण विद्वेष चल रहा है। आर्थर की अंधी माँ का वात्सल्य बड़े भावात्मक ढंग से प्रस्तुत हुआ है।

भारतीय समाज का विवाह आदि के लिए पाश्चात्य देशों के प्रति आकर्षण का दुश्परिणाम ज्ञात होता है।

ललिता (अध्यापिका) -

ललिता डबल एम.ए करके एक स्कूल की हेडमास्टरनी बन जाती है। एक दिन एक विवाह में उसका परिचय सुधीर से होता है वह उसे एकांत में ले जाकर शादी का प्रस्ताव रखता है जिसे वह मान भी जाती है। वह शादी करके विदेश चला जाता

उसे वापस बुलाने का आश्वासन देकर। सप्ताह में वह दो-दो चिठ्ठियां ललिता को लिखता है उसके लिए ढेरों उपहार भी भेजता है। और बार-बार यही लिखता जल्दी ही तुम्हें यहां बुलाने की व्यवस्था कर रहा हूँ। एक वर्ष बीत गया और पत्रों का आना भी बन्द हो जाता है। तब ललिता के बाबूजी उसे लन्दन भेजने की व्यवस्था करते है। लन्दन पहुँचकर जब ललिता सुधीर के पत्नी और बच्चों से मिलती है तो बूत बनके खड़ी रह जाती है। सुधीर उसे वहाँ देखकर सकपका जाता है फिर उसका परिचय चाचा की लड़की के रूप में सबसे करवाता है। ललिता तुरन्त वहाँ से वापस अपने शहर आ जाती है और फिर से अपनी नौकरी करने लगती है। इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास से यह प्रमाणित होता है कि स्त्री यदि आर्थिक दृष्ट्या आत्मनिर्भर होती है तो पुरूष समाज द्वारा दिए गए अन्यायों और अत्याचारों का सामान करने में समर्थ रहती है।

चल खुसरो घर आपने (1982) –

'चल खुसरो घर आपने' का शिवानी का स्त्री वर्ग समस्याओं को दिखाने वाला उपन्यास है। उपन्यास की कहानी नायिका कुमुद के इर्द-गिर्द चलती है। कुमुद के पिता की मृत्यु के बाद घर में उसकी माँ और दो छोटे-भाई बहिन है लेकिन वो दोनों ही गलत रास्ते तय कर लेते है तब कुमुद की भावनाओं को गहरा आघात लगता है और वह पारिवारिक स्थितियों के कारण घर से दूर राजा साहब की विक्षिप्त पत्नी की परिचर्या के लिए नौकरी हेतु चली जाती है। कुमुद को वहाँ भी चैन नहीं था वहाँ के वातावरण को भी सह नहीं पाती और मानसिक तनाव से घिर जाती है। शिवानी ने पूर्ण सेवाभावी और कर्तव्यबोध से परिपूरित व्यक्तित्व के अन्तर्द्वन्द्व को कुमुद के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

कुमुद (शिक्षित नारी) –

कुमुद सेवा भावी और शिक्षिता नारी है जो अपना फर्ज पूरी तरह से निभाती है।

लेकिन पारिवारिक परिस्थितियों ने उसे घर से दूर रहने को विवश कर दिया। वह राजा साहब की विक्षिप्त पत्नी की परिचर्या करती है। किन्तु घटनाचक्र ने उसके जीवन को इस प्रकार परिचालित किया कि वह स्वयं मनोरोग की शिकार हो गई। अन्त में उसे घर ही वापस आना पड़ता है। उन्ही परिस्थितियों के बीच जिनसे वो कभी भागी थी।

पूतोंवाली (1986) -

'पूतों वाली' के माध्यम से शिवानी जी ने एक ऐसे कथानक को प्रस्तुत किया है जिसमें कि बच्चे अपने कर्तव्यों से दूर ही नहीं बल्कि माँ बाप को विस्मृत कर बैठे है। उपन्यास में पार्वती व उसका पति शिवसागर है। शिवसागर जो कि शास्त्रीय सुन्दरता को आधार बना अपनी होने वाली पत्नी का चित्र खींचता है लेकिन उसके चित्र के रंग बिखर जाते है जब वह अपनी बदसूरत और मुट्ठी भर देह वाली पत्नी को ब्याहकर लाता है। शिवसागर अपनी पत्नी से कभी बात नहीं करता है उसका पार्वती से रात के अँधेरे तक का सम्बन्ध है। एक के बाद एक पार्वती शिवसागर को पाँच पुत्रों का पिता बना देती है परन्तु जब वही पुत्र एक से बढ़कर एक पद पर नियुक्त होते है तो शिवसागर व पार्वती को भुला देते है और अपनी शान में पैबन्द समझकर ठुकरा देते है। शिवसागर को अपनों से लगी प्रथम चोट सहनशील पार्वती के बड़प्पन का भान करा देती है और वह पार्वती से आत्मिक प्रेम करने लगता है। अभागी पार्वती जब मरती है तो पूरा गाँव उसके साथ था सिवाय, पाँचो पुत्रों के एक भी पुत्र उसे काँधा देने नहीं आता और पूतों वाली पार्वती काकी मौन विदा लेती है।

पार्वती (अभागिन माँ) -

पार्वती पूतों वाली है। पार्वती जिसके पाँच-पाँच पुत्र थे, पर सभी जिन्दगी की रंगीनियों और समृद्धि में ऐसे डूबे कि भूल गए उस अभागिन बूढ़ी माँ को, जिसने

जनम-भर दुःख झेले और जिसे चैन की अन्तिम साँस भी नहीं मिली। बदकिस्मत पार्वती हमेंशा ही अधूरी रहती है जब उसके पास पाँच-पाँच पुत्रों का प्रेम था तब पति का प्रेम नहीं था और जब पति का प्रेम वह पाती है तो पाँचो पुत्र विमुख जाते है। पार्वती कभी भी पूरे परिवार का प्रेम एक साथ नहीं पा सकी। पार्वती ने हर पहलू को अधूरा ही जिया और मृत्यु भी अधूरी सी मिली।

उपप्रेती (1997) -

लघु उपन्यास 'उपप्रेती' रमा नाम की लड़की को केन्द्र बना कर लिखा गया उपन्यास है। रमा की सौतेली माँ उसे दुःख देती है लेकिन सहनशील रमा अपने मौन से सबको जीतती हुई एक दिन विवाह करके अपने ससुराल चली जाती है। रमा की सखी एक लेखिका है जो कि रमा के देवर की शादी में उसकी ससुराल जाती है तब उसे पता चलता है कि रमा एक लम्बे समय बाद अपने पति का हृदय जीतने में सक्षम हो पायी है और उसके देवर की बारात में गया उसका अभियन्ता पति आते ही रमा को अपने साथ नौकरी पर ले जायेगा परन्तु वह अभागी बारात फिर कभी नहीं लौटी। पहाड़ की सर्पिलाकार सड़कों पर घूमती बारात की बस गहरें खड्डे में गिरी तो घर में बची खुची औरतों को ढाँढस देने वाला भी कोई नहीं बचा। रमा सन्यास लेकर तीर्थ चली जाती है। वहाँ उसकी लेखिका सहेली उस मौनी माता बनी रमा को देखती रह जाती है। उस लेखिका को अभी ओर भी बहुत कुछ देखना था। एक दिन अचानक वह रमा के पति और रमा की देवरानी को देख लेती है जिसे लेने वह बारात गई थी। फिर कभी नहीं लौटी तब इतनी गहराई में गिरी बस के चूरन में ये दोनों कैसे बच गये। रमा का पति स्वयं लेखिका को पूरी कहानी सुनाता है और याचना करता है उसकी वृद्ध माँ और सरला रमा को उन दोनों के जीवित होने की बात न बताये। रमा अपनी वैधव्यपूर्ण जिन्दगी को साध्वी बनकर भोगती है फिर मृत्यु से आलिंगनबद्ध हो विलय हो जाती है।

रमा (साध्वी) –

रमा सौतेली माँ के तानों को हँसकर सहती है। जब रमा का विवाह होता है तो उसे सुखों की एक आशा बँधती है, लेकिन उसे भी निराशा में बदलते समय नहीं लगता, क्यों कि उसके काली होने के कारण उसका पति उसे नहीं अपनाता।

एक लम्बे समय के बाद वो अपने पति का हृदय जीतने में सफल हो पाती है। लेकिन दुर्घटनावश रमा फिर अकेली रह जाती है। रमा अपनी वैधव्यपूर्ण जिन्दगी को साध्वी बन कर भोगती है। इस प्रकार रमा को शेष जीवन श्वेत परिधान और मन के शांत राग में ही बिताना पड़ा। सौम्य रमा आरम्भ में स्वभाव के कारण मौन रहती है और अन्त में जब उसके बोलने के दिन आते हैं, तब नियति उसे मौन बना जाती है, हमेंशा के लिए।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी साहित्य कोश, पृ. 488
2. साहित्य का उद्देश्य - मुंशी प्रेमचंद- हंस प्रकाशन, इलाहाबाद. पृ. 54
3. हिन्दी उपन्यास में कथा शिल्प- डॉ. प्रताप नारायण टण्डन
4. राइटिंग फार यंग पीपल - एम.एल रॉबिन्सन. पृ11
5. द नावेल एण्ड देअर आथर्र - सॉमरसेट मॉम
6. द आर्ट ऑफ फिक्शन - हेनरी जेम्स-पृ. 393
7. ह्यूमन नेचर इन द मेकिंग, संस्करण, 1947. मेक्स शान. पृ.159
8. राइटिंग टू शैल्फ में इज टफिंग द हालो मैन करेक्टराइजेशन 1950-स्कार मेरीडिथ-पृ. 62
9. चौदह फेरे - शिवानी - पृ. 13
10. द आस्पेक्ट्स ऑफ द नोवल, एडबर्ड अरनोल्ड एण्ड कम्पनी, संस्करण 1949 -ई.एम.फर्स्टर-पृ65
11. यशपाल व्यक्तित्व और कृतित्व, अनुराग प्रकाशन, अजमेर प्रथम संस्करण 1970, डॉ. सरोज गुप्ता - पृ.292
12. मणिमाला की हँसी (स्त्री कितनी स्वतन्त्र) - शिवानी - पृ. 150
13. श्मशान चम्पा - शिवानी - पृ.12
14. कृष्णवेणी - शिवानी - पृ. 32
15. कालिन्दी - शिवानी - पृ. 38
16. रश्या - शिवानी - पृ. 32
17. मणिमाला की हँसी (स्त्री कितनी स्वतन्त्र) - शिवानी - 153
18. कालिन्दी - शिवानी - पृ. 146
19. कालिन्दी - शिवानी - पृ. 147
20. मायापुरी - शिवानी - पृ. अन्तिम
21. कैजा - शिवानी - पृ. 42
22. अभिव्यक्ति - डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा - पृ. 46
23. भैरवी - शिवानी - पृ. 132
24. आलोचना - नवाँक जुलाई, 1965. पृ. 158
25. स्वयंसिद्धा - शिवानी - पृ. 12

26. उत्तरकथा - श्री नरेश मेहता - पृ. 124
27. पूतोंवाली - शिवानी - पृ. 15
28. चौदह फेरे - शिवानी - पृ. 9
29. कालिन्दी - शिवानी - पृ. 38
30. कालिन्दी - शिवानी - पृ. 38
31. रथ्या - शिवानी - पृ. 31-32
32. सुरंगमा - शिवानी - पृ. 169
33. सुरंगमा - शिवानी - पृ. 168
34. अतिथि - शिवानी - पृ. 134
35. रतिविलाप - शिवानी - पृ.29-30
36. सुरंगमा - शिवानी - पृ. 36
37. वही -वही - पृ. 37
38. शिवानी के उपन्यास : संवेदना और शिल्प - डॉ. मकरकन्द भट्ट. पृ. 69
39. मणिमाला की हँसी - शिवानी - पृ. 151
40. कालिन्दी - शिवानी - पृ. 15
41. वही - वही - पृ. 38
42. कालिन्दी - शिवानी - पृ. 122-123
43. चल खुसरो घर आपने - शिवानी - पृ. 51
44. वही - वही - 52
45. चौदह फेरे - सिवानी - पृ. 15
46. कस्तुरी मृग - शिवानी - पृ. 10
47. सुरंगमा - शिवानी - पृ. 58
48. पूतोंवाली - शिवानी - पृ. 21-22
49. चौदह फेरे - शिवानी - पृ. 27
50. कृष्णकली - शिवानी - पृ. 52
51. वही - शिवानी - पृ. 50
52. वही - शिवानी - पृ. 51
53. वही - शिवानी - पृ. 143
54. श्मशान चम्पा - शिवानी - पृ. 47
55. सुरंगमा - शिवानी - पृ. 182

56. वही - शिवानी - पृ. 191
57. वही - शिवानी - पृ. 192
58. वही - शिवानी - पृ. 115
59. कालिन्दी - शिवानी - पृ. 38
60. वही - शिवानी - पृ. 138
61. अतिथि - शिवानी - पृ. 26
62. वही - शिवानी - पृ. 1
63. माणिक - शिवानी - पृ. 31
64. रश्या - शिवानी - आवरण पृष्ठ से